



टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

नवम्बर 2020 वर्ष 24, अंक 10 □ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 □ विक्रमी सम्वत् 2077 □ कुल पृष्ठ 16
ई-मेल: tankarasamachar@gmail.com □ एक प्रति का मूल्य 20/- रुपये □ वार्षिक शुल्क 200 रुपये □ आजीवन 1000/- रुपये

महर्षि दयानन्द और दीपावली

□ डॉ. महेश विद्यालंकार

महापुरुषों की परम्परा में ऋषि दयानन्द की अलग पहचान और महत्व है। जैसे सभी पर्वतों में हिमालय की अलग विशेषता, आकर्षण तथा ऊँचाई है उसी प्रकार स्वामी दयानन्द का निराला व्यक्ति एवं कृतित्व था। अज्ञान, अंधकार, ढोंग, पाखंड आदि में डूबी मानव जाति के उद्धार के लिए और भारत माता के आंसू पोंछने के लिए वह निराला महापुरुष उनसठ वर्ष की अवधि के लिए संसार में आया था।

शिवरात्रि को आत्मबोध व सत्यबोध हुआ। फिर घर से सच्चे शिव एवं सत्य को पाने के लिए निकल पड़े तथा जीवन भर धार की ओर मुड़कर नहीं देखा। सम्पूर्ण जीवन देश, धर्म, संस्कृति, वेदोद्धार मानव उत्थान और कल्याण में लगा दिया, अपने लिए न कुछ चाहा, न मांगा, न संग्रह किया और न कोई चेला व चेली बनाई, न कोई मठ-मंदिर व गद्दी बनाई। ऋषि ने कोई धर्म, पंथ व नया सम्प्रदाय नहीं चलाया, वे सारा जीवन जहर पीते रहे, अपमान सहते रहे, गालियां और पत्थर खाते रहे तथा बदले में संसार को सीधा सच्चा एवं सरलमार्ग बताते रहे।

दीपावली से ऋषि दयानन्द के जीवन की अमर गाथा जुड़ी है। इसी दिन ऋषि ने अपना पंच भौतिक नश्वर शरीर छोड़ा था। एक दीप बुझा, किन्तु वे असंख्य लोगों को नवजीवन प्रकाश दे गए। ऐसा अद्भुत, विलक्षण, पुण्यात्मा, योगी, ऋषि, त्यागी, तपस्वी महापुरुष इतिहास में दुर्लभ है। यह दीपावली उन्हीं के उपकारों, योगदान और स्मृति का पर्व है। ऋषि के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने तथा अश्रुपूरित होकर उन्हें नम्र श्रद्धांजलि देने का निर्वाणोत्सव है। वह युगपुरुष संसार में जो सत्य, धर्म व वेद की ज्योति जला गये है। वह युगों तक संसार को संमार्ग दिखाती रहेगी।

वे सत्य के शोधक, सत्यवक्ता, सत्यप्रचारक अंत में सत्य पर ही शहीद हो गए। उन्होंने गलत बातों के साथ कभी समझौता नहीं किया, यदि ढोंग, पाखंड, गुरुडम, पुजापे-चढ़ावे आदि के साथ समझौता किया होता तो वे उन्नीसवीं सदी के सबसे बड़े भगवान् होते, उनके कट्टर विरोधी भी अंदर से उनके प्रशंसक थे। स्वामी जी का जीवन मन-वचन तथा कर्म से एक जैसा था, उनके सम्पर्क में जो आया, जिसने उन्हें देखा, सुना एवं पढ़ा उसी का कायाकल्प हो गया न जाने कितने गुरुदत्त, श्रद्धानन्द, हंसराज, अमीचन्द आदि के जीवन संत तथा परोपकारी बन गए।

इतना जबरदस्त चुम्बकीय आकर्षण एवं जादुई शक्ति और किसी महापुरुष में नजर नहीं आता है, लोग तलवार लेकर आए शिष्य बनकर

गए, जिधर से निकले उधर ही ढोंग-अज्ञान, पाखंड मिटाते चले। वह सत्य का पुजारी, निर्भीक संन्यासी संसार में बुराईयों के विरुद्ध अकेले लड़ा, विजयी हुआ, उन्हें अनेक बार जहर दिया गया, वे बदले में जगत को अमृत देते रहे। गालियां देने वाले को फल व मिठाइयां भिजवाते थे, कई जगह पत्थरों की वर्षा हुई, वे इसे फूलों की वर्षा मानते थे, 'अपने विषदाता जगन्नाथ को प्राणदान दिया' दुनिया के इतिहास में ऐसा उदाहरण दूसरा न मिलेगा। विषदाता जगन्नाथ को क्षमाकर, रुपये देकर भाग जाने की सलाह देने वाला महायोगी, पुण्यात्मा ऋषि दयानन्द ही थे। स्वामी जी के जीवन की अनेक घटनाएँ और बातें हैं, जिससे हम बहुत कुछ शिक्षा, प्रेरणा, मार्गदर्शन और आदर्श प्राप्त कर सकते हैं। उनका जीवन भी प्रेरक था और मृत्यु भी प्रेरक बनी। जाते-जाते भी नास्तिक गुरुदत्त को आस्तिक बनाकर वैदिक धर्म का दीवाना बना गए।

घनघोर अमावस्या की रात में संसार को ज्ञान तथा प्रकाश की दीपावली देकर, ऋषि का जीवन भी निराला था, उनकी दीवाली भी निराली थी। संसार के इतिहास में ऐसा अनेखा व्यक्ति नहीं मिलेगा, जो होश में तारीख पूछकर, प्रभु को धन्यवाद करके, प्रार्थना करते हुए, हंसते-मुस्कराते हुए जिसने शरीर छोड़ा हो, वह ऋषि दयानन्द थे, वे मृत्यु के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ गए, उनकी मृत्यु सुखांत थी 'क्योंकि उन्होंने सम्पूर्ण जीवन प्रभु की इच्छा पूर्ण हो' में लगा दिया था।' ऐसे महापुरुष की स्मृति का पर्व है दीपावली' जिसे हमने हाल ही में मनाया है आर्य समाज ऋषि दयानन्द का जीवंत स्मारक है, ऋषि के अधूरे विचारों, सिद्धान्तों आदर्श आदि का प्रचारक एवं प्रसारक आर्य समाज है। आर्य समाज के अतीत का इतिहास तप-त्याग, बलिदान, सेवा, निर्माण सुधार आदि कार्यों से भरा हुआ है। आर्य समाज के क्रांतिकारी विचारों, कार्यों, वैज्ञानिक, चिंतन, सत्यमूलक सिद्धांतों आदि ने जीवन व जगत् को बड़ी दूर तक प्रभावित किया। आर्य समाज ने एक प्रकार से चौकीदार की भूमिका निभाई, जागते रहें।

ऋषि दयानन्द हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए किले की दीवार बनकर खड़े हो गए, उन्होंने आर्य समाज के माध्यम से हिन्दू धर्म का परिष्कृत, प्रेरक, व्यवहारिक तथा वैज्ञानिक स्वरूप संसार के सामने रखा, आर्य समाज के कार्यों की सबने सराहना की है। आर्य समाज के सिद्धांत,

(शेष पृष्ठ 15 पर)

जीवन के इन पन्नों में भी पढ़ाई है

- पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी

प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकत्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, द्रस्टी महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा (जन्मभूमि)

माता-पिता बच्चों को वो किस्से बहुत चाव से सुनाते हैं जो उन्होंने अपने बचपन में जीये, गांव में खेत पर, शुद्ध वायु में घूमना, खेत से सब्जी तोड़कर वहीं कच्चे खा जाना, ट्यूब वेल पर नहाना, गाड़ी के पुराने टायर से गांव भर में उसे घुमाते हुये दौड़ना, पिट्टू का खेल, मकई बाजरे की मीठी रोटी देसी घी से बनाई और ना जाने कितने ऐसे किस्से जो पिछली पीढ़ी ने युवा अवस्था में विद्यालय की छुट्टियों में आनन्द से बिताई होंगी। खुद अपने और अपनों के करीब ले जाने वाला यह समय तभी तो कई किस्सों-कहानियों का गवाह बना, क्या आपको नहीं लगता है कि मासूमियत भरे वो पल जो जिन्दगी से जोड़ते थे, अब आपके बच्चों की दुनियां का हिस्सा ही नहीं है। आपको नहीं लगता कि आप को उन्हें उन दिनों के वातावरण की सौगात देनी चाहिए।

हमारे विचार से छुट्टियों में दिये गए गृह कार्य में कक्षा 5 तक के विद्यार्थियों को उनके माता-पिता को भी सम्मिलित करना होगा। उन्हें यह समझना होगा कि बच्चे ईश्वर द्वारा उनको दिया गया बहुत सुन्दर उपहार है और बच्चे अब से आने वाले वर्षों में नई ऊँचाइयों पर होंगे, यही वजह है कि गृह कार्य में पाठ्यक्रम का बोझ ना होकर उनसे जुड़ने की कोशिश वाले बिन्दु शामिल हो, इन छुट्टियों के दिनों को और रोचक एवं अधिक समझ भरा बनाने की आवश्यकता है। इस कारण हमें मुख्य बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देना होगा, माता-पिता को इन बिन्दुओं में कई छोटी-छोटी बातें हैं जिन्हें आने वाली जिन्दगी को दिशा देने वाले जरूरी दिशा निर्देश हों।



परिवेश से जुड़े- आज की जीवनशैली में जो कुछ पीछे छूटा है लगभग वे सभी बातें जिन्दगी की बुनियाद को व्यावहारिक रूप से मजबूती देने वाली बातें हों। यही वजह है कि इस गृहकार्य में पढ़ोसियों में मेलजोल बढ़ाने से लेकर दादी-नानी के घर जाने तक के लिए निर्देश शामिल हों। सामाजिक परिवेश से कटे बच्चे अब कई मानसिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं के शिकार हो रहे हैं, स्कूल के दिशा निर्देशों में साफ लिखा हों कि छुट्टियों में कम से कम तीन पढ़ोसियों से घर जाएं उन्हें जानें और उनके साथ अच्छे रिश्ते बनाएं, एन्वायरमेंट को सहेजने और अपनी जरूरतों को पूरा करने की सीख के मायने यकीनन बहुत गहरे हैं तभी तो इस गृहकार्य में यह बात भी शामिल है कि अभिभावक बच्चों को किचन गार्डन बनाने के लिए बीज बोने के लिए प्रेरित करें।

मेहनत का मान करना सीखें- इस दौर में बच्चों की जीवन जीने की ताकत भी कम हुई है, वे जिन्दगी से जूझना भूल रहे हैं, सब कुछ इतनी आसानी से उनके हिस्से आ रहा है कि वे श्रम का सम्मान करना ही भूल गए हैं। माता-पिता की उलझनों और भागमभाग को भी बच्चे ना तो समझते हैं और ना ही समझना चाहते हैं। यह गृहकार्य इस बिन्दु को भी लिए हो कि अभिभावक बच्चों को अपने कार्यालय में लेकर जाएं, साथ ही उन्हें समझाएं कि अपना खाना कभी बेकार न करें, वाकई यह बच्चों के लिए जरूरी सीख है कि वे मेहनत का मान करना बचपन से ही सीखें, इसके लिए उन्हें अपने साथ खाना बनाने में मदद करने दें, बच्चों को सब्जी या फिर सलाद बनाने का काम दें, खाने के बाद उन्हें अपनी प्लेटें खुद धोने दें, उन्हें कोई पालतू जानवर जैसे कुत्ता, बिल्ली, चिड़िया या मछली पालने दें (अगर आपके घर पर संभव हो तो), संभाल-देखभाल से जुड़े ऐसे काम बच्चों को शारीरिक तन्दुरस्त तो रखेंगे ही इस तरह के कामों से बच्चे मेहनत की कीमत समझेंगे।

जीवनशैली में बदलाव लाएं:- आरामतलब जीवनशैली आज के बच्चों की जीवन का हिस्सा है। जिससे ना केवल उनका शरीर नाजुक बन रहा है बल्कि वे मन से भी कमजोर हो रहे हैं। छोटे-छोटे बच्चों में अब सर्दी-गर्मी सहने का धैर्य भी नहीं बचा अपने बच्चों को बाहर जाकर खेलने दें, बहुत छोटी चोट लगने दें (कहते हैं कि साइकिल चलाना वही सीखता है जो उससे बार-बार गिरा होगा), गंदा होने दें, कभी कभार गिरना और दर्द सहना उनके लिए अच्छा है। मोबाइल फोन भी बच्चों में आक्रामकता और असामाजिकता बढ़ा रहे हैं। इस गृहकार्य में बच्चों को टीवी, मोबाइल फोन, कम्प्यूटर और इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से दूर रखने की बात कही गई हो। यह बदलाव मौजूदा लाइफस्टाइल में एक जरूरी बदलाव है।

संस्कृति के रंगों को भी जियो:- गृह कार्य की आवश्यक लिस्ट के मुताबिक बच्चों के अभिभावकों से यह भी कहा गया हो कि छुट्टियों में वे किसी भी स्थानीय त्यौहार या स्थानीय बाजार को अनदेखा न करें, इस गृहकार्य में एक खूबसूरत सी यह बात भी शामिल हो कि अभिभावक बच्चों को कुछ लोकगीत सुनाएं। याद कीजिए आप के माता-पिता (वर्तमान में दादा-दादी, नाना-नानी) कैसे मेलों और लोकगीतों की बात अपने बच्चों से करते थे। आपको जमीन से जुड़े उन रंगों के बारे में बताते थे जो आपने अपने बचपन में जी भरकर जीए।

आपसी जुड़ाव की सीख:- यूँ तो अन्न को सहेजने से लेकर पर्यावरण और अपने परिवेश से जुड़ने तक कि बातें छुट्टियों में करने (शेष पृष्ठ 15 पर)



परेशान नहीं करेगा बुढ़ापा

दिनचर्या को सुधारने में कैसे हासिल कर सकते हैं खुशियां इस पर सुझाव

स्वस्थ रहने के लिए सही आहार, रोज व्यायाम और पर्याप्त नींद जरूरी है। इसकी शुरुआत दिनचर्या में सुधार से होगी। सुबह-शाम का नाश्ता और दोपहर-रात का भोजन सही समय पर लें। रोज 40 मिनट चलना भी जरूरी है। आजकल ज्यादातर लोग गाड़ियों से ही आना-जाना करते हैं। रोज पैदल चलने का बहाना खोजें। ऐसा करेंगे तो न कभी बीमार पड़ेंगे और न कभी बुढ़ापा परेशान करेगा।

शारीरिक, मानसिक और आत्मिक संतुलन बनाकर स्वस्थ तन, प्रसन्न मन और सुखी जीवन बनाया जा सकता है। स्वास्थ्य, खुशी और समृद्धि की चाबी सुबह से रात तक हम जो भी काम करते हैं, वह हमारी जीवनशैली है। दूसरे शब्दों में इसे दिनचर्या भी कह सकते हैं। सही जीवनशैली स्वास्थ्य को अच्छा बनाती है, जबकि गलत जीवनशैली आपको बीमार बनाती है। स्वस्थ का शाब्दिक अर्थ स्व. में स्थित होना है। आत्मा और परमात्मा की स्मृति द्वारा तन और मन दोनों स्वच्छ हो जाते हैं। व्यर्थ विचारों से बचने के लिए आत्मिक स्थिति का अभ्यास करना मददगार साबित होता है।

उषा-पान:- अर्थात् सुबह उठते ही एक गिलास से चार गिलास तक पानी पीना चाहिए, यह आप को बिना दांत साफ किये और बिना मल त्याग किए करना चाहिए। पहले एक गिलास से प्रारम्भ करें, धीरे-धीरे चार गिलास तक पानी पी सकते हैं।

भोजन पर ध्यान दीजिए:- नाश्ते में सेव आदि कोई एक फल लें। अंकुरित चने, सोयाबीन, मूँग, मोठ, मूँगफली में से कोई एक नाश्ते में ले सकते हैं। भोजन दिन में दो बार करें। दो भजनों के बीच में सात-आठ घण्टे का अन्तर अवश्य रखें। सात्विक भोजन करें। मांस, मछली, अण्डे न खाएं। भोजन शांत मन से शान्तिपूर्वक करना चाहिए। गुस्से में हैं, दुःखी हैं, तनाव में हैं, रंज में हैं, जल्दबाजी में हैं तो भोजन न करें। भोजन को ठूस-ठूस कर मत खाइए। बिना चोकर निकले मोटे आटे की मोटी रोटी खाइए। प्रातः काल भोजन के बाद यथासम्भव छाछ (मट्ठा) पीजिए। दोनों भोजनों के बीच में आवश्यकता पड़ने पर कोई फल खाएँ। रात्रि का भोजन सोने से ढाई घण्टे पहले समाप्त कर लेना चाहिए। दूध पीना है तो रात्रि को सोते समय पीजिए। दिनभर पर्याप्त मात्रा में पानी पीवें। -वर्षा ऋतु में पानी उबालकर पीवें। दालें छिलकें सहित खाएँ। नमक और चीनी कम से कम खाएँ। मिर्च मसालों का कम से कम उपयोग करें। चाय, कॉफी आदि का सेवन कम से कम करें। सिगरेट, तम्बाकू, खेनी, शराब आदि से दूर रहें।

कब क्या खाएं? चैत्र मास में नीम के पत्ते खाएं, बैसाख में बेल का गूदा खाएं। जेठ में किशमिस खाएं, आसाढ़ में अदरक खाएं। सावन में हरड़ खाएं। भादों में चित्तवा खाएं। आसोज में गुड़ खाएं। कार्तिक में मूली खाएं। मंगसर में तेल खाएं, पौष में दूध पीएं। माघ में घी के साथ खिचड़ी खाएं। फाल्गुन में हरा आवंला चबा कर खाएं। बिना किसी रोग के सौ वर्ष तक जीवित रह सकते हैं।

रेशेदार खाना खाएं, यही सही डाइट:- स्वस्थ रहने का फार्मूला प्राकृतिक के साथ जीओ और प्राकृतिक चीजों का सेवन करो। नाश्ता और भोजन का समय निश्चित कर उसी समय पर खाना चाहिए। भोजन में

रेशेदार खाद्य पदार्थों को शामिल करें। सलाद, चोकर के साथ आटा, अंकुरित मूँग, गेहूँ आदि का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करना चाहिए। भोजन अधिक रेशेदार शाकाहारी होना चाहिए। फल भी ज्यादा से ज्यादा लेना चाहिए। फल जल्दी पच जाता है इसलिए फल को भोजन के साथ नहीं खाना चाहिए। फल को खाली पेट ही खाना चाहिए।

मौन- मौन कहते हैं चुप रहने को। बोलने से, बोलते रहने से जितनी शक्ति का हास होता है, उसका अनुमान लगाना सरल नहीं है। मौन एक शक्तिशाली क्रिया है। मौन की साधना करने से मन की अशान्ति दूर हो जाती है। शान्ति प्राप्त होती है। दुर्बल और कमजोर मन शक्तिशाली बन जाता है। मौन साधना कीजिए। मौन रहने से, चुप रहने से, हम अपनी आत्मा की आवाज सुन सकते हैं। इसलिए मौन साधना करो। मौन होकर मन से 'ओ३म्' का जप करो। मौन साधना करते हुए आहार थोड़ा कम ही लेना चाहिए। भोजन में फल और दूध का सेवन करें। पानी पीवें। घर के एकांत में बैठकर मौन-साधना करें।

मौन एक तप है, साधना है। मौन एक शून्य अवस्था है। मौन-साधना एक बहुमूल्य निधि है। मौन-साधना द्वारा परमात्मा के साथ साक्षात्कार हो जाता है।

प्रातःकालीन भ्रमण:- प्रातःकाल का भ्रमण एक महत्वपूर्ण व्यायाम है। दुनिया में इस जैसा सरल, हल्का एवं गुणकारी व्यायाम सम्भवतः दूसरा कोई नहीं है।

प्रातः काल के भ्रमण से कब्ज समाप्त हो जाता है। पाचनशक्ति बढ़ जाती है। बदन हल्का हो जाता है। काम करने को मन चाहता है। नींद बहुत अच्छी और गहरी आती है। सोकर उठने पर शरीर भारी प्रतीत नहीं होता, वह हल्का, ताजा और फुर्तीला महसूस होता है। पैरों को मजबूत बनाता है।

रात के वक्त कभी पैदल न चलें:- पैदल चलने के लिए सूर्यादय का समय सबसे सही रहता है। इस वक्त वायुमंडल में जीवनदायी तत्व ज्यादा मात्रा में रहते हैं। सूर्यादय के समय पेड़-पौधे भोजन बनाना शुरू करते हैं और वायुमंडल में ऑक्सीजन छोड़ते हैं। यही वजह है कि इस वक्त वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ी हुई होती है। वॉकिंग का मकसद ही ज्यादा से ज्यादा ऑक्सीजन शरीर के सभी अंगों तक पहुंचाना होता है। इसलिए सूर्यादय के समय ही वॉकिंग करनी चाहिए। आम इंसान को 40 से 45 मिनट रोज चलना चाहिए।

इस जन्म में जो कुछ भी हमें करना है वह इस शरीर के माध्यम से ही करना है। इस कारण शरीर निरोग, स्वरूप, सक्रिय एवं उसे प्रसन्न रखना है भोजन करते समय हमें पानी नहीं पीना चाहिए।

इसे मैं यज्ञ के उदाहरण से स्पष्ट करना चाहूँगा। यज्ञ करने के लिए सर्वप्रथम हवन-कुण्ड में छोटी-छोटी समिधाएँ, लकड़ियाँ लगाकर अग्नि प्रज्वलित करते हैं अग्नि प्रज्वलित हो जाने के बाद उसमें घी और सामग्री डालते हैं। उस हवन-कुण्ड के चारों ओर बैठे स्त्री-पुरुष तथा बच्चे उसमें अँधा-धुंध सामग्री और घी की आहुतियाँ देते रहेंगे तो उस अँधा-धुंध डाले हुए घी और सामग्री को अग्नि जला नहीं पाएगी, वह दब जाएगी, मंद हो जाएगी, उससे धुआँ निकलने लगेगा। धुएँ के कारण आसपास बैठे व्यक्तियों की आँखों से पानी बहने लगेगा और हाँ! यदि

आपने घी और सामग्री के साथ एक-दो चम्मच पानी भी उसमें डाल दिया तो वह अग्नि बुझ जाएगी, घी और सामग्री को जला नहीं पाएगी।

ठीक इसी प्रकार जब हमें भूख का अनुभव होता है तो इसका अर्थ यह है कि हमारे पेट में हवन-कुण्ड की भाँति अग्नि प्रज्वलित हो गई है। अब उस अग्नि को जलाने अथवा पचाने के लिए भोजन रूपी सामग्री चाहिए। यदि आप भोजन को ढूँस-ढूँस कर जरूरत से ज्यादा पेट में भर लेंगे तो वह भोजन अग्नि को दबा देगा। अग्नि उस भोजन को जला नहीं सकेगी, पचा नहीं सकेगी, पेट में धुआँ उठ जाएगा, गैस भर जाएगी और आप परेशान हो जाएंगे। आगे चलकर यह गैस शरीर के अंग-अंग में फैलने लगेगी और जहाँ भी जोड़ हैं जैसे:- घुटने का जोड़, कोहनी का जोड़ आदि-आदि में रूक जाएगी और उन जोड़ों में दर्द, गठिया आदि रोग उत्पन्न हो जाएंगे।

समझ लिया आपने कि आप कितनी भयंकर भूल करते हैं, भोजन को ढूँस-ढूँस कर पेट में भरकर अथवा भोजन के बीच में पानी पीकर।

वज्रासन में बैठने का जहाँ तक संबंध है, वज्रासन एक चमत्कारी आसन है। इसके अभ्यास से मूलाधार में स्थित वज्र-नाड़ी प्रभावित होती है। संतो-योगियों का कहना है कि वज्र-नाड़ी का सीधा संबंध पाचन-संस्थान से है। इसलिए वज्रासन में कुछ देर बैठने से भोजन पाचन सरलतापूर्वक जल्दी हो जाता है।

प्रिय पाठकों! यदि आपने अपने खान-पान, रहन-सहन और आचार-विचार में सुधार कर लिया तो आपका शरीर और मन कुन्दन के समान शुद्ध तथा गंगाजल के समान पवित्र हो जाएगा। आप स्वस्थ, सक्रिय, प्रसन्न और आनन्दित होते हुए, जीवन का आनन्द प्राप्त कर सकेंगे।

मेरे द्वारा बताए गये सुझाव स्वयं के अभ्यास से प्राप्त उपलब्धियाँ पर आधारित हैं, हर एक को अपने शरीर और मानसिकता के अनुसार अनुकरण करना होगा। हर वस्तु की अति ठीक नहीं, अपने बदलने में धीरे-धीरे बदलाव लाये बहुत तीव्रता नुकसान भी कर सकती है।

अजय टंकारावाला

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

केवल व्यक्तिगत ही नहीं संस्थाएं भी सदस्य बन सकती हैं।

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षों से पधार रहे हैं यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रुपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

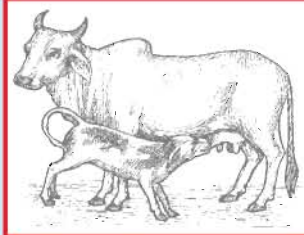
शिवराजवती आर्या
(उप-प्रधाना)

अजय सहगल
(मन्त्री)

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके। वर्तमान में अच्छी गाय 75000/- रुपये के लगभग प्राप्त हो रही है।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 25,000/- रुपये गाय की खरीद



हेतु सहयोग राशि भेज रहे हैं। 3 सहयोगी प्राप्त होते ही गाय खरीदी जाती है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गर्म वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें।

आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक:- शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

अजय सहगल (मन्त्री)

महर्षि दयानन्द के जीवन में कई क्षण मृत्यु के आए

□ खुशहाल चन्द्र आर्य

महर्षि देव दयानन्द के जीवन में अनेकों ऐसे क्षण आए जिनमें महर्षि जी को अपने जीवन की जोखिम उठानी पड़ सकती थी। परन्तु महर्षि जी ने अपने साहस, धैर्य, बल, कुशाग्र, बुद्धि तथा ईश्वर पर अटुट विश्वास के कारण वे अपने जीवन को बचा सके। मैंने महर्षि जी के जीवन का जितना अध्ययन किया है जिनमें निम्नलिखित क्षण ऐसे आए हैं जिनमें उनका जीवन समाप्त हो सकता था परन्तु महर्षि जी के भाग्य ने उनका साथ दिया जिससे वे अपने जीवन को बचा सके।

वे क्षण या मौके इसी भाँति हैं.....

1. बचपन की घटना- महर्षि देव दयानन्द अपने माता-पिता की प्रथम संतान थे इसलिए बड़े लाड-चाव से पाले गये थे। इनको गहने, अंगुठी, मूल्यवान कपड़ों से सजाकर रखते थे। इनको खिलौने, पिलाने, नहाने-धोने व खेलाने के लिए एक नौकरानी यानि दय्या रखी हुई थी। वह दयानन्द के बचपन का नाम मूलशंकर को खिलाती-पिलाती, नहलाती, घुलाती, खेलती थी। एक दिन मूलशंकर के काफी गहने व मूल्यवान कपड़े पहना देखकर दय्या के मन में लालच आ गया और वह सोचने लगी कि किसी ने किनारे इस बच्चे को ले जाकर इसके गहने-अंगुठी तथा मूल्यवान कपड़े उतारकर मैं रख लूंगी और बच्चे को मारकर नदी में बहा दूंगी। ऐसा ही करने के लिए वह मूलशंकर को नदी के किनारे ले गई और उसके गहने अंगुठी उतारने लगी तभी मूलशंकर दया भरी नजर से दय्या को देखा तो दय्या का मन पिघल गया और गहने न उतारकर उसको घर ले गई। यह घटना स्वामी दयानन्द की प्रथम मौत से बचने की घटना है। यह घटना महर्षि की प्रत्येक जीवनी में नहीं लिखी है परन्तु किसी-किसी जीवनी में लिखी है सो जानना।

2. दुर्गा के भक्तों द्वारा मारने का प्रयास:- तंगनाथ पर्वत की तलहटी से चलकर महर्षि जी कुछ आगे बढ़े तो उनको कुछ झोपड़ियाँ दिखाई दी जिसमें रात्रि विश्राम के लिए बस्ती में चले गये। बस्ती निवासियों ने महर्षि जी की बड़ी सेवा की और विनम्र प्रार्थना की आप कुछ दिन यही ठहर जाओ। महर्षि जी उनके प्रेम को देखकर वही कुछ दिन ठहरने की निश्चय किया। वह बस्ती दुर्गा भक्तों की थी। दुर्गा पर्व आ गया तो वे सब भक्त लोग महर्षि जी को दुर्गा मन्दिर में ले गये। मन्दिर के द्वार पर एक मजबूत देहधारी व्यक्ति हाथ में खाण्डा लिए हुए देखा। महर्षि जी मूर्ति के समीप पहुँच गये। वहीं अर्धे आयु का पुजारी खड़ा था। साथ आये दुर्गा के भक्तों ने कहा “स्वामी जी एक बार आप दुर्गा के सम्मुख नतमस्तक होकर प्रणाम अवश्य कीजिए।” स्वामी जी दृढ़ता पूर्वक कहा-“मैं मूर्तिपूजक नहीं हूँ। इस पर पुजारी क्रोधित हो गया और उसने स्वामी जी की गर्दन को कस कर पकड़ा और मूर्ति के सामने झुकना चाहा, पर वह उस बस्र देह की गर्दन को हिला भी नहीं सका। स्वामी जी मुड़े तो एक खड्गधारी व्यक्ति उनकी गर्दन पर वार करना चाहता था तो सिंह सी स्फूर्ति से खड्ग उसके हाथ से छीनकर मन्दिर के प्रागण में निकल आये। वहाँ कई दुर्गा-भक्त हाथों में शस्त्र लेकर उन पर टूट पड़े। स्वामी जी तेजी से खड्ग घुमाते हुए मन्दिर की दीवारफांद कर अन्धरे में विलीन हो गये। इस प्रकार स्वामी जी ने अपनी जान बचाई।

3. रींद का सामना करने की घटना:- बदरीनारायण से रामपुर होते हुए स्वामी जी काशीपुर पहुँच गए। वहाँ से उत्तर भारत का भ्रमण

करके नर्मदा के तट पर पहुँचने के बाद उसके आदि स्रोत की ओर इस आशा से चल पड़े कि सम्भव है कहीं किसी विलक्षण सन्त के दर्शन हो सकें। रास्ता विकट था, कुछ दूरी तक पगडण्डियों के निशान मिले। धीरे-धीरे वे भी बिलुप्त हो गये। बस्ती होने का कहीं कोई संकेत नहीं दिखता था। किधर जाना चाहिए, स्वामी जी सोच ही रहे थे कि सामने से एक विशाल काम काला रींद दौड़ता हुआ आता दिखाई दिया। वह कुछ दूरी पर ठहर कर पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और जोर से चिचांड़ा। वह उन पर वार करना ही चाहता था कि स्वामी जी ने स्फूर्ति से अपना डण्डा जैसे ही उसकी तरफ बढ़ाया वह उनके सामने ठहर न सका। परन्तु जाते समय रींछ इतनी जोर से चीखां की उसकी आवास सुनकर पहाड़ी लोग अपने कुत्तों सहित वहाँ उपस्थित हो गये और स्वामी जी से बस्ती में आने की प्रार्थना की। परन्तु स्वामी जी ने उन्हें विनम्रता पूर्वक लौआ दिया और अपनी राह पर बढ़ चले।

4. रावकर्ण सिंह से सामना:- स्वामी जी विभिन्न स्थानों में धर्म चर्चा और पाखण्डों का खण्डन करते हुए सन् 1868 ई ज्येष्ठ मास में कर्णवास पहुँच गये। उस समय कर्णवास में गंगा के मेले की धूम थी। उस अवसर पर करौली के रईस राव कर्ण सिंह भी अपने दल-बल सहित गंगा स्नान के लिए आए हुए थे। उन्होंने एक और गंगा के किनारे मण्डप बनवा रासलीला का आयोजन किया। मेले में पधारे सभी साधु सन्तों और पण्डितों को उसमें आमन्त्रित किया। उसका आमन्त्रण महर्षि जी को भी मिला परन्तु महर्षि जी उसमें सम्मिलित नहीं हुए और रासलीला का खण्डन करते रहे। अगले दिन राव कर्ण सिंह अपने समर्थकों को सहित महर्षि जी की कुटिया पर आ पहुँचे और क्रुद्ध होकर बोले “सभी साधु संत हमारी रासलीला में पधारे। आप क्यों नहीं आये? महर्षि जी उसकी भाव-भंगिमाओं से उसका उद्देश्य समझ गये थे। उन्होंने उत्तर दिया-“हम ऐसे निन्दनीय कृत्यों में सम्मिलित नहीं होते हैं।”

क्रोध से उसके नेत्र लाल हो गये। वह गरज कर बोला “आप रासलीला को निन्दनीय कृत्य कहते हैं, आप गंगा और अवतारों की निन्दा भी करते हो। मैं इनकी निन्दा करने वालों के साथ अच्छा बर्ताव नहीं करता हूँ। आपको सम्भल कर बोलना चाहिए और उसका हाथ तलवार की झूठ पर चला गया। महाराज के उपदेश सुन रहे सज्जनों के चेहरे पर अनिष्ट घट जाने के भाव अंकित होने लगे। परन्तु महर्षि जी सहज भाव से बोले “हम किसी की निन्दा नहीं करते हैं, जिसे जैसा देखते हैं वैसे ही कहते हैं। हमारे सामने कोई हमारे महापुरुषों का स्वांग भरे और हम उसे देखते रहे, यह कार्य अति निन्दनीय है। अति निर्बल, व्यक्ति भी अपने पूर्वजों के स्वांग का सहन नहीं कर सकता। आप अपने महापुरुषों का ऐसे व्यक्तियों द्वारा स्वांग भरते हो जो आचरण पतित हैं। ऐसे कार्य करते हुए लज्जा आनी चाहिए।

महर्षि जी की यह वार्ता सुनकर रावकर्ण सिंह आपे से बाहर हो गये। वे अपनी तलवार लेकर उठ खड़े हुए। उनके साथ उनके समर्थक भी खड़े हो गये। शस्त्र भी उनके पास थे। ऐसा देखकर श्रद्धालुजन घबरा गये, परन्तु महर्षि जी ने मुस्कुराते हुए कहा-“कर्ण, सिंह साधुओं से शास्त्रार्थ किया जाता है। यदि आपको शास्त्रार्थ करना ही है तो फिर महाराजा जयपुर या जोधपुर से जाकर भिड़ना चाहिए और दिव्य

शास्त्रार्थ करना चाहते हो तो वृंदावन से अपने गुरु रंगाचार्य को ले आइए।

गुरु का नाम सुनते ही रावकर्ण सिंह की आँखों में खून उतर आया। उसने तलवार को म्यान से बाहर निकाल लिया और महर्षि जी को उपशब्दों से सम्बोधित किया। यह दृश्य देख श्रोताओं की सांसें रूक गईं। राव कर्ण सिंह क्रोध में अन्धा हो गया था। उसने तलवार वाला हाथ ऊँचा किया और महर्षि जी की ओर बढ़ा। महर्षि जी सम्भल कर बैठे हुए थे। उन्होंने स्फूर्ति के साथ उसका खड्ग वाला हाथ की कलाई से पकड़ लिया और इतने बल से दबाया की उसके हाथ से तलवार छूट गई। उसे पसीना आ गया, चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगी। महर्षि जी ने बाएँ हाथ से तलवार की मूठ पकड़ उसकी नोंक को धरती पर टेक कर इतने जोर से दबाया की तलवार के दो टुकड़े हो गये। महर्षि जी ने कहा-“हम संन्यासी हैं! जाओ परमात्मा तुम्हारा हित करे और तुम्हें सद्बुद्धि प्रदान करे।”

5. स्वार्थीजनों द्वारा स्वामी जी की प्राण हानि का प्रयास:- भारतवर्ष में उस समय महर्षि देव दयानन्द ही ऐसे अकेले साधु थे जो धर्मन्धाता, छुआ-छूत, अन्ध विश्वास, पाखण्ड, जातिगत भेदभाव और अशिक्षा के विरुद्ध जूझ रहे थे। प्रबुद्ध लोग उनके अनुयायी बन सद्धर्म प्रचार में सहयोगी हो गये थे परन्तु पाखण्डी और ढोंगी लोग उनके प्राण लेने में उतर गये थे।

शहबाजपुर (उत्तर प्रदेश) में रहते हुए ठाकुर गंगा सिंह उनके भक्त बन गये थे। नित्य उनके प्रवचन सुनने जाते। एक दिन दो वैरागी बाबा, ठाकुर गंगा सिंह जी के पास आये और उनके कुछ समय के लिए अपनी तलवार देने के लिए कहा। उन्होंने तलवार लेने का कारण पूछा तो वे आवेश में बोले-“गम्पाष्टिक दयानन्द के जीवन का हम अन्त कर देना चाहते हैं। वह देवी-देवताओं का अपमान करता है। भागवत् का खण्डन करता है। अब वह हमारे हाथों से बचकर नहीं जा सकता।”

ठाकुर गंगा सिंह ने कहा-“वे तो उत्तम साधु हैं। उनका संग करने के बाद ही आप उनको समझ सकोगे। याद रखना इस विचार को लेकर पुनः मेरे पास आने का साहस न करना। अन्यथा इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा।” ऐसा सुनकर वे चले गये। इसके उपरान्त ठाकुर साहब महर्षि जी सेवों में पधारे और उन्हें वैरागियों की पूरी घटना कह सुनाई। महर्षि जी मुस्कुराए और बोले-“मेरा वध करने का सामर्थ्य उनमें नहीं है। आप निश्चित होकर विश्राम करिये।” इस पर भी गंगा सिंह ठाकुर पूरी रात महर्षि जी को सेवा में प्रहरी की तरह जागते रहे।

6. वैष्णव मतावलम्बी द्वारा महर्षि जी की प्राणहरण की चेष्टा:- आश्विन सुदि 92 संवत् 1839 (सन् 1874 ई.) को महर्षि जी ने मुम्बई निवासियों के आग्रह पर उस नगर में प्रवेश किया। नगर वासियों ने रेलवे स्टेशन पर उनका भव्य स्वागत किया और गोसाईंयों के अखाड़े में बालुकेश्वर पर उनको ठहरा दिया। श्रोताओं की संख्या अधिक होने के कारण कोट मैदान में एक विशाल मण्डप का प्रबन्ध किया गया। महर्षि जी के प्रवचनों को सुनने के लिए हजारों की संख्या में लोग सभा भवन पर नित्य ही उपस्थित होते। पाखण्ड की रीढ़ पर चोट करने से महर्षि जी कभी नहीं चुकते थे, इस लिए महर्षि जी जहाँ भी जाते वही विरोधियों की भी कमी न होती। उस समय मुम्बई में वैष्णव मत का अच्छा प्रभाव था। उनका प्रचार था कि तन, मन, धन, सब गुरु के अर्पण। महर्षि जी ने इसका घोर विरोध किया। जब सर्वस्व ही गुरु को समर्पित कर दिया तो-परिवार व समाज के लिए क्या शेष रह गया। इस

समर्पण की आड़ में आवर्दित घटनाएँ घट जाने की सम्भावना बनी रहती है। यह सुनकर वैष्णव मतावलम्बी जीवन गोसाईं महर्षि जी पर अति क्रोधित हुआ। इस बात की जानकारी महर्षि जी को हो गई थी। उसने आगे षडयन्त्र का माध्यम महर्षि जी के सेवक बलदेव सिंह को बनाया। बलदेव लोभ में फंस गया। एक हजार रूपयों की राशि के मोह ने उसे अन्धा बना दिया। जीवन गोसाईं खुश था। वह समझता था कि बलदेव महर्षि जी का विश्वास पात्र सेवक है। भोजन में विषादि देने में उसे कोई असुविधा नहीं होगी। उसने बलदेव सिंह को महर्षि जी का देहावसान हो जाने पर एक हजार रूपये देने के लिए लिखित आश्वासन दे दिया और पाँच रूपये और एक सेर मिठाई अग्रिम उसे दे दी थी।

जब बलदेव महर्षि जी के सामने आया तब उसके चेहरे के भाव महर्षि जी को बदले-बदले लगे। उनके मन में सन्देह उत्पन्न हो गया। उन्होंने उससे पूछ लिया-गोसाईंयों के यहाँ गया था। बलदेव सिंह का शरीर कांपने लगा। उसने गर्दन हिलाकर हाँ भी भरी। महर्षि जी मुस्कुराए और बोले-तो दयानन्द के सांसें का हरण करने के लिए कितने में सौदा तय हुआ? “बलदेव सिंह-महर्षि जी के चरणों में गिर पड़ा और उसने पूर्व घटी पूरी घटना कह सुनाई। उसने क्षमा कर देने के लिए महर्षि से प्रार्थना की और भविष्य में गोसाईंयों के यहाँ न जाने की प्रतिज्ञा की।

महर्षि जी ने उसे क्षमा तो कर दिया परन्तु उसको अपने पास नहीं रखा। जीवन गोसाईं अपने इस षडयन्त्र में सफल नहीं हुआ, तो उसने दूसरी चाल उसने भाड़े पर चार गुण्डे महर्षि दयानन्द की हत्या कर देने के लिए तैयार किये। महर्षि जी नित्य नियम से समुद्र तट पर भ्रमण के लिए जाया करते थे। वे गुण्डे महर्षि जी का पीछा करने लगे। महर्षि जी को समझते देर नहीं लगी। एक दिन महर्षि जी उसके सामने खड़े हो गये और गंभीर वाणी में कहाँ “तुम मेरी हत्या करना चाहते हो”? महर्षि जी के बोलते ही उनके पैरों तले जमीन खिसक गई। वे कुछ देर तक भी उनके सम्मुख खड़े नहीं हो सके। जीवन गोसाईं इतना भयभीत हुआ कि उसने मुम्बई छोड़ दी। वह मद्रसभाग गया।

वैसे तो स्वामी जी को सत्तरह बार विष दिया गया, परन्तु इन्होंने न्यौली क्रिया द्वारा विष को बाहर निकाल दिया। जिसमें एक घटना अधिक प्रचलित है कि एक धर्मान्ध ब्राह्मण ने स्वामी जी को पान में विष दे दिया। एक सैयद मोहम्मद नामक तसीलदार जो स्वामी जी का अन्नय भक्त था उसको मालूम पड़ने से उस ब्राह्मण को जेल में डाल दिया और स्वामी जी को यह सारी बात बताई। स्वामी जी ने कहा कि हम तो लोगों को बन्धनों से मुक्ति दिलाने आये हैं। बन्धन कराने नहीं। तब तहसीलदार ने उस दोषी को छोड़ दिया। काशी के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ के समय भी पण्डित लोगों ने गुण्डे बदमाशों को अपने साथ ले जाने के लिए बुला रखा था। जिससे वे अपनी हार को छिपाने के लिए उनसे स्वामी जी के ऊपर ईंटें, पत्थर फेकवाकर हल-गुल्ला करवा सके। वैसे ही किया भी परन्तु रघुनाथ सहाय जो स्वामी जी का परम भक्त था उसने स्वामी जी की जान बचा ली। एक बार स्वामी जी अलकनन्दा बर्फाली नदी में उस पर जाने के लिए नदी में उतर गए और काफी कष्ट सहा। इसी प्रकार स्वामी जी नर्मदा नदी के तट पर जाते हुए उनको भीषण व भयंकर जंगलों की खाक छालनी पड़ी और जंगली भयंकर जानवरों से अपनी जान बचाई। परन्तु इस लेख में केवल छः बड़ी घटनाओं का विवरण किया है। आशा है कि सुधिपाठकगण इस लेख को पढ़कर अपने ज्ञान की वृद्धि करेंगे जिससे मेरा परिश्रम भी सार्थक होगा।

- 180, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला), कोलकाता-700007, मो. 9830135794

मेरे ऋषि की शान निराली

वह समय जब ऋषि दयानन्द का प्रार्थभाव हुआ और गुरु विरजानन्द की कुटिया से प्रण लेकर निकले थे तो लोग स्त्री जाति को पशु तुल्य जानते थे। एक पुरुष कई स्त्रियों को रखने का अधिकारी समझता था। ऋषि ने इस अन्याय के विरुद्ध प्रचार किया उन्होंने कहा- 'स्त्री का मनुष्य समाज के निर्माण में पुरुष की अपेक्षा अधिक हाथ है। स्त्री ही है जो मनुष्य समाज को वीरों का संघ भी बन सकती है और भीरुओं तथा नपुंसकों को टोला भी। अच्छे आचार और अच्छी विद्यावाली माताएं ही अच्छे पुत्र उत्पन्न कर सकती हैं। अतः उन्हें मान की दृष्टि से देखना चाहिए। उन्हें घर की रानी समझना चाहिए। उन्हें पढ़ाना और प्रत्येक प्रकार की विद्या में प्रवीण करना अत्यन्त आवश्यक है। वे छोटी से छोटी पुस्तक से लेकर वेद पर्यन्त सब कुछ पढ़ने का उसकी प्रकार अधिकार रखती है जिस प्रकार पुरुष।' लोगों ने ऋषि के इन उपदेशों को बुद्धि के कानों से सुना और हृदय पटल पर लिख लिया। सैकड़ों वीर ऋषि के उपदेशों के अनकूल अपना जीवन बनाने और उन उपदेशों को संसार भर में फैलाने के लिए मैदान में निकल आये और आज हम देखते हैं कि ऋषि के उपदेश समस्त भारत में फैलते चले जा रहे हैं। लोग ऋषि दयानन्द का नाम न लें परन्तु यह एक सच्चाई है कि वे प्रायः चल उसी मार्ग पर रहे हैं जिस पर ऋषि उन्हें चलाना चाहते थे।

इस प्रकार तप, त्याग और अहिंसा के प्रचार में, ऋषि दयानन्द एक ईश्वर की पूजा करने और उसका प्रचार करने में समकालीन अन्य महापुरुष के तुल्य होने पर भी वह एक खास शान के मालिक हैं। उनमें एक निराली बात पाई जाती है और वह है 'दूरदर्शिता'। अहिंसा का प्रचार महात्मा बुद्ध ने भी किया और ऋषि दयानन्द ने भी। परन्तु जहां महात्मा बुद्ध ने अहिंसा की सीमा न बांधकर जाति को क्षात्र धर्मोचित वीरता से खाली कर दिया वहां ऋषि दयानन्द ने अहिंसा की सीमा निश्चित कर दी। उन्होंने कहा-निर्दोश प्राणियों के प्राणहरण करना, स्वार्थ के लिए किसी कोकष्ट पहुंचाना पाप है। रक्तपात न करना परम धर्म है। परन्तु समय पड़ने पर वीर तलवार बंदूक इत्यादि शास्त्रास्त्रों से शत्रु के सिर को धड़ से पृथक करना और उसके रक्त से भूमि को रंजित करने में संकोच न करना भी परम कर्तव्य है। प्रत्येक प्रकार से शत्रु के आक्रमण को रोकना और आगे के लिए उसे आक्रमण करने में अशक्त बना देना परमोचित है। ऐसे अवसर पर की गई हिंसा, हिंसा नहीं-अहिंसा की खेती के लिए बाड़ है। जो जाति प्रत्येक समय और अवस्था में अहिंसा से चिपटी रहती है वह वस्तुतः संसार में हिंसा को बढ़ाती है। अदूरदर्शिता के कारण बुद्ध की असीमित अहिंसा भारत को नपुंसक बना सकती थी। दूरदर्शी ऋषि दयानन्द की अहिंसा किसी भी जाति अथवा देश को सबल बना सकती है।

भगवान् बुद्ध से पूर्व भी संस्कृत भाषा, वेद तथा अन्य सत्शास्त्र ब्राह्मणों की-वह भी केवल पुरुषों की-सम्पत्ति समझे जाते थे। और ऋषि दयानन्द से पूर्व भी। जाति को संकीर्ण हृदय ब्राह्मणों के पंजे से छुड़ाना आवश्यक था। बुद्ध ने इसका साधन आर्य जाति से वेदादि शास्त्रों और संस्कृत भाषा को छुड़ाने और ऋषि दयानन्द उनके पढ़ने का अधिकार सब मनुष्यों को देने में, समझा। बुद्ध ने आर्य जाति को उसके पूर्वजों की सत्पत्ति को त्यागने का उपदेश दिया- ऋषि दयानन्द ने ऐसा

करने को भयंकर भूल समझा। उन्होंने आर्य सभ्यता, आर्य संस्कृति और वैदिक साहित्य को प्यारी वस्तु समझकर और उसे मनुष्यों के लिए हितकर जानकर उन्हें उससे लिपटा रहने का उपदेश दिया। बुद्ध ने पशु-वध और वेदादि शास्त्रों को खोलकर देखने का कष्ट स्वीकार न किया, परिणाम जाति का बिगाड़ निकला। महर्षि ने स्वार्थी ब्राह्मणों के वचन को मिथ्या जाना। वेदादि शास्त्रों का पक्षपात रहित होकर अवलोकन किया और अन्त में अविद्या के आवरण में छिपी हुई इस सच्चाई को संसार के सामने प्रकट किया कि पशुवध और वेदादि के पढ़ने में तथा स्त्रियों के संबंध में ब्राह्मणों का कथन सर्वथा स्वार्थ पूर्ण है, अविद्यामूलक है।

ऋषि का निरालापन- श्री शंकराचार्य के प्रचार से अनीश्वरवाद मर सा गया और उससे संसार की जो हानि होनी थी वह न होने पाई, परन्तु उनके अद्वैतवाद ने जाति को रसातल में पहुंच दिया। जगत् को मिथ्या मानकर लोग अकर्मण्यता के महारोग में फंस गये। परन्तु ऋषि दयानन्द ने मनुष्यों को बताया, तुम जीव हो, जिस प्रकार तुम जड़ प्रकृति नहीं बन सकते, उसी प्रकार तुम्हारा ब्रह्म बन जाना भी असंभव है, यह जगत् सत्यपदार्थ है, इसे मिथ्या कहने वाला स्वयं मिथ्यावादी है। अपने आपको ब्रह्मा मानकर अकर्मण्यता के रोग में ग्रस्त होना अपने जन्म को विफल कर बनाना है। कर्म करना-इस संसार को सुन्दर बनाना-तुम्हारा कर्तव्य है।

हजरत मुहम्मद ने मूर्तिपूजा का खंडन किया, एक ईश्वर की उपासना का उपदेश किया परन्तु मक्का को खुदा का घर, उस घर के हज को धर्म का आवश्यक अंग, उसमें स्थापित हजरूल असबद (काला पत्थर) के चुम्बन और स्पर्श को सौभाग्य प्राप्ति का साधन, अपनों की कबर के दर्शनों को साक्षात् जीवित मुहम्मद के दर्शन बताकर, इस सुन्दर उपदेश में कुरूपता का मिश्रण कर दिया। उनके उपदेश से पत्थर के देवताओं की तो पूजा बंद हो गई, परन्तु मक्का के मंदिर, असबद और कबरों की पूजा ज्यों की त्यों बनी रही इसके अतिरिक्त उनके मत में केवल ईश्वर को मानने वाला और मोक्ष प्राप्ति में किसी अन्य मनुष्य को सहायक न मानने वाला मनुष्य मुसलमान नहीं बन सकता बल्कि मुसलमान बनने के लिए ईश्वर को मानने के अतिरिक्त हजरत मुहम्मद की पैगम्बरी पर विश्वास रखना भी आवश्यक है। केवल ईश्वर की उपासना करने वाला और हजरत मुहम्मद को न मानने वाला उनके मत में न केवल यह कि मुसलमान नहीं, बल्कि जघन्य है। इस विषय में ऋषि की शान निराली है। उनकी शिक्षा में परमात्मा का न कोई विशेष घर है, न किसी पत्थर को चूमने की आज्ञा है। कबर के दर्शन करना तो दूर रहा, उन्होंने अपनी कबर या समाधि बनाने की आज्ञा भी नहीं दी, बल्कि अपने शरीर की राख के संबंध में भी यह आदेश कर गये कि इसे खेत में अथवा नदी में फेंक देना ताकि लोग मेरी समाधि बनाकर उसकी पूजा ना आरम्भ कर दें। उनके मत में प्रत्येक मनुष्य केवल अपने पुरुषार्थ से सीधा ईश्वर को प्राप्त कर सकता है। मुक्त होकर उसके आनन्द को प्राप्त करने में समर्थ हो सकता है। जीवात्मा और परमात्मा के मध्य में किसी वकील की आवश्यकता नहीं। इस संबंध में हजरत मुहम्मद की शिक्षा में मनुष्य पूजा का जहां विशेष स्थान है वहां ऋषि दयानन्द की शिक्षा इस दोष से सर्वथा अछूती है।

- आभार पुस्तक 'निराले दयानन्द'

महर्षि दयानन्द का सपना अज्ञान को अभी दूर करना है

□ पं. उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्य के क्रान्तिकारी प्रचारक थे जब सृष्टि में ईश्वरीय संविधान वैदिक धर्म और सृष्टि क्रम पर संकट उपस्थित होता है परिस्थियां बिगड़ जाती है। तब ईश्वरीय व्यवस्था में महान आत्माएं अधर्म का नाश करने के लिये जन्म लेती हैं। आज हम एक महापुरुष संसारिक बन्धनो से मुक्त महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के धार्मिक सामाजिक-राजनैतिक में व्याप्त अन्धविश्वासों व सामाजिक कुरूपियों के विरुद्ध क्रान्तिकारी वैचारिक क्रान्ति के योद्धा पर विचार करके उनके सुधार वादी क्रान्ति के सपनों को पूरा करने का यथाशक्ति सकल्प लेते हैं।

तदात्मानं-सृजाम्यहम्

उन्नीसवीं सदी में भारत की विषम परिस्थियों के चैलेज के रूप में युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म हुआ था। 14 वर्ष की आयु में ही मूलशंकर ने यजुर्वेद कण्ठस्थ कर लिया था।

ऋषि दयानन्द समझते थे कि हिन्दु समाज का ढांचा बिगड़ा हुआ है। तब इसे कैसे बदला जा सकता है। महर्षि दयानन्द जी जब इस देश के रणंगण में उतरे तब चारों तरफ चौलेन्ज ही चौलेन्ज नजर आए। ऋषि दयानन्द की आत्मा ने जवाब दिया, सर्व प्रथम विदेशी राज्य को बरदास्त नहीं करूंगा। यही कारण है सर्व प्रथम उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा था स्वराज्य सर्वोपरि है और उन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन का बिगुल बजाया।

1857 की स्वतन्त्रता क्रान्ति का असफल होने का कारण भीतरघात था और देश द्रोहियों के कारण असफलता मिली थी और अंग्रेजो ने बुरी तरह कुचल दिया था। स्वाधीनता का नाम लेना भी भयानक था। ऐसी विकट समय और परिस्थिति में भी महर्षि दयानन्द जी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन का नव जागरण किया। 1857 से 1947 तक आर्य समाज संगठन के बेनर तले लाखों युवको ने बलिदान किया था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के स्वप्नो का भारत (रूढिवाद पर प्रहार)—वर्तमान युग के भारत के सामाजिक विचारो में ऋषि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सदियों से परम्परागत रूढिवाद पर कठोर प्रहार किया। अब तक के सामाजिक विचारक की सोच थी जो चला आ रहा है उसी में सुधार व रक्षा करती है किन्तु समाज में व्याप्त धार्मिक-सामाजिक राजनैतिक अन्धविश्वासो के उन्मूलन के प्रति और अन्य किसी का भी साहस नहीं हुआ। यदि किसी ने समाज की एक बुराई के प्रति ही आन्दोलन किया था किन्तु महर्षि दयानन्द जी तो तमाम व्याप्त कुरूपियों के उन्मूलन हेतु कर्म कर मैदान में कूद पड़े थे।

भारत का धर्म वेदो से बंधा हुआ था और सभी वेदो की शिक्षा को मानते थे किन्तु तत्कालीन विद्वानो ने जैसे शंकराचार्य, मेक्समूलर, जेकोवी, महीधर आदि ने वेदो के इतिहासपरक मौलिक अर्थ किये थे। उन्होंने कहा वेदो में जातिपाति है वेदो में अवतारवाद है वेदो में शूद्रो और स्त्रीयों को वेद पढने का अधिकार नहीं है। वेदो में पशुबलि है वेदो में सती प्रथा है मृतक भोज व श्राद्ध आदि है अनेक धार्मिक-सामाजिक कुरूप्याएं का चलन बनाकर समाज में एक अन्धविश्वासो की दीवार खड़ी कर दी थी। महर्षि दयानन्द जी ने वेदो के ईश्वरपरक अर्थ किये कहा वेद मंत्र योगिक है और उपयुक्त मान्यताओं को एक सिरे से खारिज कर दिया। उन्होंने सबसे पहला प्रहार वेदो के रूढी अर्थो पर किया।

धार्मिक क्षेत्र में रूढीवाद पर प्रहार और ईश्वरीय वेदानुसार

साम्यवाद का सपना—महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने उपदेशो और शास्त्रों में कहा महाभारत के बाद सर्वाधिक मानव का शोषण धार्मिक क्षेत्र में हुआ है। धर्म वह है जो सृष्टि क्रम से वेदानुसार व विज्ञान अनुसार है जो आदि से अनादि काल तक अपने परोपकारी स्वरूप में रहता है धर्म कभी भी मानव को दुःख नहीं देता है। किन्तु स्वार्थी लोगो ने अपने-अपने कल्पित मत बनाकर मानव समाज को बांट दिया और ईश्वरीय मानव धर्म से हटाकर आपस में उलझा दिया, और अपने-अपने मतों को धर्म का रूप दे दिया। जबकि मानव धर्म वेदो से बंधा होने के कारण एक है, एक निराकार सर्वशक्तिमान ईश्वर की पूजा, एक तरफ से वैदिक सोलह संस्कार, साम्यवाद, सर्वहितकारी शोषण रहित मान्यताएं। जाति पाति छुआछूत व वर्ग वाद रहित।

महर्षि दयानन्द जी ही एक ऐसे विचारक थे जिन्होंने भारतीय संस्कृति को छोड़ा भी नहीं और पाश्चात्य संस्कृति का भी सामना किया उन्होंने वेदो से लेकर वेदो मे से ही रूढीध्वानि के साथ टक्कर लेकर सर्वथा नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया प्राचीनता तथा नवीनता के सम्मिश्रण का आधार खड़ा कर दिया।

सामाजिक क्षेत्र में रूढीवाद पर प्रहार और आदर्श समाज का सपना महर्षि दयानन्द जी के विचार का दृष्टिकोण सर्वथा मौलिक था। वे भूत वर्तमान तथा भविष्य को तथा पिछले तथा अगले को मिलाकर चलना चाहते थे। यही कारण है कि सिर्फ भूत के साथ चिपटे रहने वाले रूढीवाद का सामाजिक क्षेत्र में भी उन्होंने बहिष्कार किया। स्त्री शिक्षा, बाल विवाह, विधवा विवाह निषेध देहेज प्रथा, जातिपाति छुआछूत आदि अनेक सामाजिक कुरूप्याओं का विरोध किया। फलस्वरूप समाज के प्रत्येक क्षेत्र में भारतीयो को एक नवीन किन्तु सरल व ससंयत रहित विचार धारा मिली। सदियों से चली आ रही अनेक कुरूप्याएं सुप्रथा में परिवर्तन होने लगी। यही कारण है 19वीं शताब्दी में सर्वाधिक सफलता महर्षि दयानन्द जी को मिली और उन्होंने जो शुद्ध रूप रेखा बना दी थी उसी रेखा पर 20वीं शताब्दी के सामाजिक तथा राजनैतिक नेताओं ने कार्य किया।

आत्म निवेदन—युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का सपना था कि हमारा भारत राष्ट्र का एक धर्म वैदिक धर्म हो, सम्पूर्ण मानव सशंय रहित अन्धविश्वास रहित जीवन जीये तथा भारतीय प्राचीन ऋषियों की परम्परा चले। समाज वर्ग रहित समानता पर चले। ऐसा साम्यवाद हो जहां कोई भेदभाव न हो। सम्पूर्ण मानव जगत विवेकशील होकर धार्मिक सामाजिक व राजनेतृत्व का शुद्ध स्वरूप विज्ञानानुसार और वेदानुसार पथ पर चले। हमारा राष्ट्र अक्षुण्ण हो सदा की जय हो। आइए आज समय की पुकार है हम महर्षि दयानन्द जी के सपनों को पूरा करें।

—गढ़ निवास, मोहकमपुर, देहरादून, मो.: 9411512019

आवश्यक सूचना

शीघ्र ही टंकारा समाचार इंटरनेट एवम् वट्सअप पर उपलब्ध होगी। सभी सदस्य पाठकों से अनुरोध है कि अपना ई-मेल पता एवम् वट्सअप मोबाइल नम्बर 9560688950 पर सदस्य संख्या एवम् नाम सहित भेजे ताकि हम पंजीकृत करा सके जिससे कि आपको उपरोक्त माध्यम से जोड़ा जा सके।

सुखदाता राष्ट्रभूमि की रक्षा से सुख

□ डॉ. अशोक आर्य

मातृभूमि, जिसे राष्ट्रभूमि भी कहते हैं अपने राष्ट्र के सब नागरिकों को सब प्रकार के सुख देती है। जो मातृभूमि हम सब की रक्षा करती है, हम सब को सुख देती है, उस मातृभूमि की रक्षा के लिए हम सब का भी जागरूक होना आवश्यक है। जब हमारी मातृभूमि रक्षित होगी तो निश्चय ही हम सब सुखी होंगे। इस तथ्य पर यह मन्त्र इस प्रकार प्रकाश दाल रहा है:-

यां रक्षन्त्यस्वप्ना विश्वदानी देवा भूमि पृथिवीमप्रमावम्।

सा नो मधुप्रियं दुहामथो उक्षतु वर्चसा॥ अथर्ववेद 12.1.7॥

मन्त्र का उपदेश है कि हम सब प्रकार के आलस्यों को त्याग कर सदा मातृभूमि की रक्षा करें। मातृभूमि के रक्षित होने से ही देश में विकास के कार्य होंगे। विकास ही सुखों का साधन होने के कारण देश का विकास नागरिकों को सुखी बनावेगा। मन्त्र के आशय पर विस्तार से विचार करते हैं:-

हितकारी पदार्थ देने वाली मातृभूमि

हमारे पुरुषार्थ में कुछ तत्व बाधक होते हैं, जो इस प्रकार से हैं:-

निद्रा:- निद्रा एक वह तत्व है, जो विश्राम के लिए माना गया है और प्रत्येक प्राणी के लिए निद्रा आवश्यक होती है किन्तु मन्त्र के आलोक में कहा गया है कि निद्रा की अवस्था में भी हम जागरूक रहें। आलस्य से परिपूर्ण निद्रा को कभी न आपनावें। जागरूक हैं तो निद्रा की अवस्था में भी हम सदा शत्रु से सावधान रहेंगे जैसे कुत्ता निद्रा से उठते ही एक दम शत्रु से युद्ध के लिए तैयार मिलता है। हम भी इस गुण को अपनावें।

तन्द्रा:- अनेक बार ऐसा होता है कि हम आँखें तो खोले होते हैं किन्तु हमारी अवस्था निद्रा की ही होती है। कौन आ रहा है, क्या हो रहा है, आँखें खुली होने पर भी हमें कुछ पता नहीं रहता। इसे ह तन्द्रा कहते हैं। देश के प्रहरी के लिए तो यह अवस्था अत्यंत घातक होती है। इस अवस्था से भी होगा तब ही हम मातृभूमि के सच्चे रक्षक बन सकेंगे।

आलस्य- आलस्य तो देश का सबसे बड़ा शत्रु है। आलसी व्यक्ति सदा यह सोचता रहता है कि अभी थोड़ी देर में उठूँगा और यह काम कर लूँगा किन्तु उसकी यह थोड़ी देर कभी पूरी ही नहीं होगी। एक आलसी व्यक्ति लेटा हुआ है। उसकी छाती पर ही

किओ पेड़ से गिरा कोई फल पड़ा है। किन्तु भूखा होते हुए भी वह आलस्य के कारण फल खा नहीं पा रहा। जाते हुए यात्री को रोक कर कहता है कि हे पथिक। मैं भूखा हूँ। कृपा करो और मेरी छाती से यह फल उठा कर मेरे मुँह में तो डालते जाओ। तिरस्कार से भरी दृष्टि उस आलसी पर डालते हुए घूरते हुए यात्री कहता है परमात्मा ने तुझे हाथ किस लिए दिए हैं? इस प्रकार का आलस्य निश्चय ही देश के लिए घातक होता है।

पुरुषार्थी बनो- इस सब का भाव यह है कि आलस्य, निद्रा और तन्द्रा आदि दोषों से रहित होकर जो लोग विद्वान् अथवा वीर हैं तथा जागरूक हैं, इस प्रकार के नागरिक जन हमारी मातृभूमि, जो सब प्रकार के उत्तम पदार्थों को देने वाली है अर्थात् हमारी सब आवश्यकताएं पूर्ण करने वाली है, इतना ही नहीं हमारे लिए उन सब पदार्थों की व्यवस्था करती है, जो पदार्थ हमारे लिए प्रिय हैं, मधुर हैं और हितकर हैं किन्तु देती उनको ही है जो आलस्य-प्रमाद से ऊपर रहते हुए सदा पुरुषार्थ करते हैं। पुरुषार्थ ही कुछ पा सकता है। आलसी नहीं। अतः मातृभूमि पुरुषार्थ करने के लिए हम सब को प्रेरित करती है। ऐसी मातृभूमि की हम आलस्य तथा प्रमाद से रहित होकर रक्षा करते हैं। जिस मातृभूमि के हम रक्षक बन गए हैं, वह मातृभूमि इन रक्षकों को ज्ञान, ऐश्वर्य, शरता और वीरता से सदा परिपूर्ण करे।

इस सब का भाव यह है कि हमारी मातृभूमि हमारे पुरुषार्थ के परिणाम स्वरूप सब प्रकार के सुख देने वाली है। ऐसी मातृभूमि की रक्षा आवश्यक है और हम जागरूक नागरिक अपनी इस मातृभूमि की जागरूक रहते हुए रक्षा करें। इस प्रकार की रक्षा से हम सब प्रकार के सुखों को भोगें।

- पॉकेट 1/61 प्रथम तल रामप्रस्थ ग्रीन सेक्टर-7,
वैशाली-201012, गाजियाबाद, चलभाष- 9354845426

**दुनिया का हर शौक पाला नहीं जाता
कांच के खिलौनों को उछाला नहीं जाता,
मेहनत करने से मुश्किल हो जाती है आसान,
क्योंकि हर काम तकदीर पर टाला नहीं जाता।**

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 12000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससे हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक:-

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधान)

अजय सहगल (मन्त्री)

क्या हमारा अगला जन्म मनुष्य योनि में होगा?

□ मनमोहन कुमार आर्य

संसार में हम चेतन जीवात्माओं के अनेक योनियों में जन्मों को देखते हैं। मनुष्य जन्म में उत्पन्न दो जीवात्माओं की भी सुख व दुःख की अवस्थाएँ समान नहीं होती। मनुष्य योनि तथा पशु-पक्षी की सहस्रों जाति प्रजातियों में जीवात्माएँ एक समान हैं जिनके सुख दुःख अलग-अलग हैं। इसका कोई तो कारण होगा? वैदिक धर्म व इसके कर्मफल सिद्धान्त का अध्ययन करने से इनका तर्क एवं युक्ति संगत उत्तर प्राप्त होता है। दर्शन ग्रन्थ बताते हैं कि जीवात्मा के जन्म का आधार, चाहे वह मनुष्य जन्म हो व अन्य असंख्य योनियों में से किसी एक योनि में हो, सदैव कर्म होते हैं। यह कर्म इस जन्म के न होकर पूर्वजन्म के होते हैं। योगदर्शन में बताया गया है कि मनुष्य के किसी जन्म में जो उसकी योनि, भोग के अन्तर्गत सुख व दुःख तथा आयु प्राप्त होती है, वह उसके पूर्वजन्म के पाप व पुण्य कर्मों के आधार पर होती है। हमारे इस जन्म के पाप व पुण्य हमारे अगले जन्म की योनि व जाति, भोग अर्थात् सुख व दुःख तथा आयु का निर्धारण करेंगे। इसी प्रकार से हमारे इस जन्म में हमें मनुष्य योनि मिलने, हमारे समस्त सुख व दुःख तथा हमारी आयु का कारण हमारे पूर्वजन्म के कर्म सिद्ध होते हैं। वर्तमान समय से पूर्व हम जो शुभ व अशुभ कर्म कर चुके हैं, हम उनका सुधार नहीं कर सकते परन्तु हम भविष्य के अपने कर्मों का तो निश्चय ही सुधार कर सकते हैं और ऐसा करके हम अपने आगामी जन्म की योनि वा जाति, भोग एवं आयु को अपने अनुकूल सुखद व मोक्षगामी बना सकते हैं। हम इस जन्म में पूर्वजन्म के कर्मों के आधार पर परमात्मा द्वारा मनुष्य बनाये गये हैं और अगले जन्म में भी परमात्मा हमें हमारे कर्मों के अनुसार हमारे माता-पिता का निर्धारण कर मनुष्य व मनुष्येतर किसी भी योनि में, जिसके कि हम पात्र होंगे, जन्म प्रदान करेगा। इस कर्म-फल सिद्धान्त को प्रत्येक मनुष्य को जानना चाहिये और अपने वर्तमान जन्म में श्रेष्ठ वेदानुकूल, मनुष्योचित, परोपकार से युक्त, देशहित तथा प्राणिमात्र के हितकारी कार्यों को करते हुए अपनी जीवन की उन्नति करनी चाहिये। इसके साथ ही इस जन्म में ईश्वर, आत्मा, प्रकृति व सृष्टि के सत्यस्वरूप को जानकर हमें ईश्वरोपासना तथा श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ का अनुष्ठान भी करना होगा। ऐसा करने पर हमारा परजन्म अर्थात् अगला जन्म निश्चय ही मनुष्यों की योनि व अच्छे परिवेश में प्राप्त होगा जहाँ हम वेदानुकूल जीवन व्यतीत करते हुए मोक्ष प्राप्ति के साधन कर सकते हैं और मोक्ष की प्राप्ति व मोक्ष तक पहुँचने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

वैदिक काल में हमारे वैदिक विद्वान व ऋषिगण ईश्वर को जानने वाले व उसका साक्षात्कार करने वाले होते थे। महाराज मनु एक ऋषि थे और वेदों के मर्मज्ञ विद्वान थे। उन्होंने मनुस्मृति ग्रन्थ का प्रणयन किया जिसे मानव धर्म शास्त्र की संज्ञा दी जाती है। उनका विधान है कि मनुष्य के पाप व पुण्य बराबर व पुण्य आधे से अधिक होने पर जीवात्मा का अगला जन्म मनुष्य योनि में होता है। मनुष्य के लिये श्रेष्ठ कर्म वहीं है जिनका विधान वेदों में है। वेदों में जिन कर्मों का निषेध है वह पुण्य कर्म न होकर अधर्म व पाप कर्म होते हैं। पुण्य कर्मों का फल सुख तथा पाप कर्मों का फल दुःख इस जन्म व भावी जन्मों में जीवात्मा को प्राप्त होता है। कर्म फल सिद्धान्त में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि मनुष्य वा जीवात्मा जो भी कर्म करता है, उस प्रत्येक कर्म का सुख व दुःख रूपी फल उसे भोगना पड़ता है। मनुष्य का कोई कर्म बिना उसका फल भोगे छूटता नहीं है। कर्म का फल सभी जीवात्माओं

को अवश्यमेव भोगना पड़ता है। ऐसी शंका भी की जाती है कि कोई मनुष्य अच्छे कर्म अधिक करे और बुरे व पाप कर्म कम करें तो उन कर्मों का आपस में समायोजन होकर बुरे कर्म पुण्य कर्मों में समाविष्ट होकर जो शेष पुण्य कर्म फल बचे उनका ही फल मनुष्य व उसकी आत्मा को वर्तमान व भविष्य काल में मिले। इसका कर्म फल के अध्येता विद्वान वा विशेषज्ञ उत्तर देते हैं कि मनुष्य को अपने शुभ व अशुभ कर्मों का फल अलग अलग अर्थात् प्रत्येक शुभ कर्म का सुख तथा अशुभ कर्म का नल दुःख भोगना पड़ता है। उदाहरण के रूप में हम कह सकते हैं कि एक व्यक्ति ने दस व्यक्तियों की जान बचाई तथा एक निर्दोष व्यक्ति की जान ली, ऐसी स्थिति में उसे 10 व्यक्तियों की जान बचाने का फल सुख के रूप में मिलेगा और एक हत्या का फल दुःख के रूप में अवश्य ही भोगना पड़ेगा। कर्मफल सिद्धान्त है “अवश्यमेव हि भोक्व्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्” अर्थात् मनुष्य को अपने शुभ व अशुभ कर्मों का फल अवश्य ही भोगना पड़ेगा, उससे वह बच नहीं सकता और न किसी मत, पंथ व सम्प्रदाय और यहाँ तक की ईश्वर भी किसी पाप कर्म के करने वाले को क्षमा मांगने पर क्षमा कर सकता है। यदि ऐसा न हो तो ईश्वर की न्याय व्यवस्था कायम नहीं रहेगी और संसार में अव्यवस्था फैल जायेगी।

सुख की इच्छा करने वाले मनुष्य को सदैव वेदविहित शुभ कर्म ही करने चाहियें इससे वह दुःखों से बच सकता है। प्राचीन काल में हमारे पूर्वज ऋषि मुनियों ने वेदों के आधार पर सुखों का आधार पंचमहायज्ञों का विधान किया है। यह पंचमहायज्ञ मनुष्य के आवश्यक कर्तव्य हैं जिसे प्रत्येक मनुष्य को श्रद्धा व निष्ठा से करना चाहिये। यह पांच कर्तव्य हैं 1. ईश्वरोपासना वा सन्ध्या, 2. देवयज्ञ अर्थात् प्रातः व सायं अग्निहोत्र यज्ञ, 3. पितृ यज्ञ अर्थात् माता-पिता की नित्य प्रति सेवा व उन्हें सन्तुष्ट रखना, 4. अतिथि यज्ञ अर्थात् विद्वान् अतिथियों का सेवा सत्कार एवं सम्मान तथा 5. बलिवैश्वदेवयज्ञ अर्थात् सभी प्राणियों, पशु, पक्षियों व कीट-पतंगों आदि के प्रति अहिंसा व प्रेम का भाव रखना व उनके जीवन यापन में सहायक होना, उन्हें यथाशक्ति भोजन कराना व उन्हें आश्रय देना। अकारण किसी पशु के प्रति हिंसा का व्यवहार कदापि न करना। ऐसा करते हुए इन कर्मों से अतिरिक्त मनुष्य को कुछ विशेष कर्म व कार्य भी करने होते हैं जिनसे मोक्ष व आनन्द की प्राप्ति होती है। इस विषय का विस्तृत वर्णन हमें ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश के नवम् समुल्लास में मिलता है। सत्यार्थप्रकाश विश्व का एक सर्वोत्तम ग्रन्थ है जो सत्य व सत्य के अर्थों का प्रकाश तथा असत्य व अविद्या का परिचय कराता है। अज्ञान रूपी अविद्या से मुक्त होने की प्रेरणा भी करता है। इस ग्रन्थ का अध्ययन कर मनुष्य ईश्वरभक्त, देशभक्त, समाजसेवी, शिक्षक, आदर्श नागरिक, आदर्श माता-पिता, बन्धु, मित्र, सखा तथा ईश्वर का प्रिय बन जाता है। अतः सबको इस ग्रन्थ का अध्ययन अवश्य ही करना चाहिये।

विद्या से अमृत व मोक्ष की प्राप्ति होती है। मोक्ष जन्म व मरण से होने वाले समस्त दुःखों की निवृत्ति को कहते हैं। यही मनुष्य जीवन का उद्देश्य है। सत्यार्थप्रकाश के नवम् समुल्लास में ऋषि दयानन्द ने मोक्ष प्राप्ति के साधन विद्या तथा अविद्या पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है वह अविद्या अर्थात् कर्मोपासना

(शेष पृष्ठ 15 पर)

વિશ્વમાં વેદોનો પ્રચાર કરવાનું શ્રેય ઋષિ દયાનન્દ અને આર્યસમાજને છે.

રમેશચન્દ્ર મહેતા

પાંચ હજાર વર્ષ પહેલા થયેલા મહાભારતના યુદ્ધ પછી વેદોનું સત્યસ્વરૂપ વિસ્મૃત થઈ ગયું હતું. વેદોના વિલુપ્ત થવાને કારણે જ સંસારમાં મિથ્યા અન્ધવિશ્વાસ તથા પક્ષપાત અને દોષપૂર્ણ સામાજિક વ્યવસ્થાનો ફેલાવો થયો છે. આના કારણે વિદ્યા અને જ્ઞાનમાં ન્યૂનતા તો અવિદ્યા અને અજ્ઞાનયુક્ત માન્યતામાં વૃદ્ધિ થઈ ગઈ છે. આશ્ચર્ય છે કે સત્યજ્ઞાનની શોધની પ્રેરણા અને એના પ્રચારનું કાર્ય ઋષિ દયાનન્દ સિવાય કોઈ વ્યક્તિને ન સુઝ્યું કે ન કોઈએ કર્યું, કર્યું તો પણ તેઓ સત્યજ્ઞાન વેદો સુધી પહોંચી ન શક્યા, અને એનાથી માનવતા પર જે ઉપકાર થવો જોઈતો હતો તે ન થઈ શક્યો. લોકો અવિદ્યાયુક્ત મત-મતાન્તરો, અજ્ઞાનયુક્ત માન્યતાઓ અને પરમ્પરાઓનું જ પોષણ કરતા રહ્યા.

તેઓ તો મત-મતાન્તર ઋષિ દયાનન્દ અને આર્યસમાજ દ્વારા ઈશ્વરે સૃષ્ટિના આરમ્ભમાં આપેલ વેદજ્ઞાનના પ્રચારનો વિરોધ કરવાં જ વ્યસ્ત રહ્યા. કે પછી એની ઉપેક્ષામાં રહ્યા.

વેદ ઈશ્વરીય જ્ઞાન હોવાથી સનાતન સત્ય છે તથા સૃષ્ટિના બધાં જ રહસ્યોથી ભરેલું છે. વેદોનું જ્ઞાન જ મનુષ્યની વ્યક્તિગત અને સામાજિક ઉન્નતિનું કારણ છે. આ તથ્ય અને સિદ્ધાન્તની પણ વિશ્વસ્તરે ઉપેક્ષા જોવા મળે છે. વર્તમાન સમયમાં પણ આપણા મત-મતાન્તરો અવિદ્યા યુક્ત, વેદવિરુદ્ધ વિચારો, માન્યતાઓ અને સિદ્ધાન્ત તથા પરમ્પરાઓ ને જ માનીને એને અનુરૂપ વ્યવહાર કરી રહ્યા છે. એટલે જ સંસારમાં અનેક પ્રકારના સંઘર્ષ અને અશાન્તિ જોવા મળે છે. સંસારમાં બધાં મનુષ્યો ઈશ્વર એક જ છે તથા બધા મનુષ્યો એક જ ઈશ્વર દ્વારા ઉત્પન્ન હોવાથી ઈશ્વરના જ સંતાન છે. બધા મનુષ્યો પરસ્પર ભાઈ-બહેનના સમ્બન્ધથી બન્ધાયેલા છે આ વસુધૈવ કુટુંબકમ્નું વ્યવહારિક સ્વરૂપ વિશ્વમાં ક્યાંય જોવા નથી મળતું. આવી વાતો વેદ અને વૈદિક સાહિત્યમાં જ જોવા મળે છે. જેનો પ્રચાર કરવાવાળો કોઈ માણસ કે સંગઠન આર્યસમાજ સિવાય અન્યત્ર જોવા નથી મળતા.

આજના સમયની સહુથી મોટી આવશ્યકતા એજ છે કે વિશ્વમાં પ્રચંડ જોર-શોરથી વેદોનો પ્રચાર કરવામાં આવે જેથી લોકો પોતાના આત્મસ્વરૂપથી પરિચિત થઈને

પોતાના આત્માની ઉન્નતિ કરીને દુઃખોથી મુક્ત થઈ શકે. સાથે સાથે જ બધા લોકો પરસ્પર એક પરિવારની જેમ સત્ય અને પ્રેમથી પરોપકાર અને સહયોગનો વ્યવહાર કરે. ઈશ્વરના સત્યસ્વરૂપને ઓળખીને એને જ માને તેમજ ઈશ્વરની ઉપાસનાથી પોતાના આત્માના જ્ઞાન અને સામર્થ્યમાં વૃદ્ધિ કરીને સુખ અને શાન્તિનું જીવન વ્યતીત કરે. સાથે સાથે બધાં લોકો પરસ્પર એક જ પરિવારની જેમ સત્ય અને પ્રેમથી પરોપકાર અને સહયોગનો વ્યવહાર રાખે. ઈશ્વરના સત્ય સ્વરૂપને ઓળખીને એને જ માને અને ઈશ્વરની ઉપાસનાથી પોતાના આત્માના જ્ઞાન અને સામર્થ્યની વૃદ્ધિ કરીને સુખ અને શાન્તિનું જીવન જીવે. વેદ અને આર્યસમાજ સહિત ઈશ્વર પણ આજ કાર્ય કરવાની પ્રેરણા પોતાના સાચા ભક્તો અને ઉપાસકોને આપે છે. ઈશ્વરની ભાવના અને પ્રેરણાને સમજવા બધા જ મનુષ્યોનું કર્તવ્ય છે. એને ઓળખીને તેમજ વ્યવહારમાં લાવીને જ આપણે બધી સમસ્યાઓનું નિદાન કરી શકીશું.

મહાભારતના યુદ્ધ પછી વેદાનુયાયિઓના આગસ અને પ્રમાદને કારણે વેદોનું જ્ઞાન વિલુપ્ત થઈ ગયું અને વિકૃતિઓ વ્યાપી ગઈ. દેશમાં સાચા ધાર્મિક સંગઠનોના અભાવ તેમજ લોકોની સત્યધર્મની શોધમાં પ્રવૃત્તિ ન હોવાને કારણે સમાજ મિથ્યા વિશ્વામાં ડૂબી ગયો અને એમાં સત્યજ્ઞાન વેદનાથી વિરુદ્ધના આડમ્બરો અને પાંખડોનો વધારો જોવા મળી રહ્યો છે.

સચ્ચિદાનન્દસ્વરૂપ, નિરાકાર, સર્વવ્યાપક, સર્વશક્તિમાન તથા સૃષ્ટિકર્તા ઈશ્વરની મૂર્તિની પૂજનો વિચાર પણ મહાત્મા બુદ્ધના અનુયાયિઓએ ફેલાવ્યો છે. સત્યની પરીક્ષામાં સર્વવ્યાપક અને નિરાકાર ઈશ્વરની મૂર્તિ તો બની જ ન શકે. આ તો એક કોરી કલ્પના માત્ર છે. આને આસ્થા પણ કહેવામાં આવે છે. પરન્તુ આસ્થા જો સત્ય હોય તોજ એના ઈચ્છિત પરિણામ જોઈ શકાય છે અન્યથા શોક અને દુઃખ સિવાય બીજું કંઈ નથી મળતું. આવી જ આસ્થા હોવા છતાં આપણા સોમનાથ, કાશી, મથુરા અને અયોધ્યા આદિના મંદિરો તોડવામાં આવ્યા અને આપણે જોતા જ રહી ગયા. આપણે સંઘર્ષ કરીને મૃત્યુની રાહ જોવામાં કે પછી ગુલામ બનવા માટે વિવશ રહ્યા પરન્તુ આ દેવમૂર્તિઓએ આપણી રક્ષા ન કરી. આજે કોરોનાની

મહામારીમાં પણ એ આપણી રક્ષા નથી કરી સકતા. આવા અનેક પ્રકારના ધાર્મિક અંધવિશ્વાસ જ દેશ અને સમાજના પતનના કારણ સિદ્ધ થયા છે જેમાં દેશના સંગઠન અને પરંત્રતાના કારણ પણ ધાર્મિક અને સામાજિક માન્યતાઓમાં સત્ય જ્ઞાન અને વ્યવહારોનો સમાવેશ ન હોવો હતું.

ઋષિ દયાનન્દને પોતાની બાલ્યાવસ્થાથી જ અજ્ઞાન અને અંધવિશ્વાસ ઉપર વિશ્વાસ નહોતો. એમણે સત્ય જાણવાનો પુરુષાર્થ કર્યો. મૂર્તિપૂજાની વાસ્તવિકતા જાણવા માટે પોતાના પિતા અને વિદ્વાનોને પ્રશ્નો પુછ્યા હતા, પણ એમની શંકાઓનું સમાધાન થઈ શક્યું નહોતું. આજ કારણે તેમણે પિતૃગૃહનો ત્યાગ કર્યો હતો અને ઈશ્વરના સત્ય સ્વરૂપને જાણવાનો પુરુષાર્થ કર્યો હતો. આની પ્રાપ્તિના પ્રયત્નોમાં જ તેઓ સાચા સમાધિ સિદ્ધ યોગી બનવાની સાથે સાથે વેદ-વેદાંગોના અપૂર્વ વિદ્વાન બની ગયા. એમણે વેદોનો અભ્યાસ કરીને, એના સત્યાસ્ત્યની પરીક્ષા કરીને પોતાના ગુરુ સ્વામી વિરજાનન્દ સરસ્વતીજીના આદેશનું પાલન કરીને તર્ક અને યુક્તિ સંગત સત્ય વૈદિક માન્યતાઓનો દેશ અને સમાજમાં પ્રચાર કર્યો. તેઓ બધા જ મત-પંથના વિદ્વાનો ધર્મ અને સમાજના હિત સાથે જોડાયેલા વિષયો પર ચર્ચા અને શાસ્ત્રાર્થ કરવાનો પડકાર આપતા હતા. પોતાના પ્રવચનોમાં ધર્મ અને આચરણ વિષયક બધી પરમ્પરાઓની તર્કપૂર્ણ વિવેચના કરીને સત્યના સ્વરૂપને સામે મૂકતા હતા. જેથી સામાન્ય પ્રજાની સાથે સાથે મત-મતાંતરોના વિદ્વાનો પણ એમના વિચારો, માન્યતાઓ અને તર્ક સાથે સહમત થઈ જતા હતા.

ઋષિ દયાનન્દે દેશ દેશમાં ફરીને વૈદિક માન્યતાઓનો મૌખિક અને ઉપદેશો દ્વારા પ્રચાર કરવાની સાથે સાથે વેદોના સત્ય સ્વરૂપને સમાજની સામે રજૂ કર્યું. એમની પહેલાના એકપણ મત કે સમ્પ્રદાયના વિદ્વાનોમાં એમની માન્યતાને ખોટી બતાવવા ને સિદ્ધ કરવાનું સામર્થ્ય નહોતું. કાશીમાં 16 નવેમ્બર 1869ના દિવસે સનાતન પંડિતો સાથે મૂર્તિપૂજા પરના શાસ્ત્રાર્થમાં પણ સમ્પ્રદાયવાદિ પંડિતો જડ મૂર્તિપૂજાને વેદાનુકૂળ

સિદ્ધ નહોતા કરી શક્યા. હજારો લોકોએ ઋષિ દયાનન્દના સત્સંગોમાં હાજરી આપીને પોત-પોતાની મૂર્તિઓનું નદિઓમાં વિસર્જન કરી નાખ્યું હતું. જીવનના અંતિમ સમય સુધી દયાનન્દનું દિગ્વિજય અભિયાન આગળ વધતું રહ્યું હતું. વર્ષો સુધીના પ્રચાર કાર્યમાં ઋષિ દયાનન્દે અનેક ઐતિહાસિક કાર્યો કર્યાં. એમણે આર્યસમાજ જેવા વેદ પ્રચાર આંદોલન અને સંગઠનની સ્થાપના કરી કે જે આજે પણ એમના વેદપ્રચારના મિશનને આગળ વધારી રહ્યું છે. વૈદિકસત્ય માન્યતાઓનો પ્રકાશ કરવાની સાથે મત-મતાંતરોની મિથ્યા માન્યતાઓની સમીક્ષા યુક્ત સંસારના એક મહત્વપૂર્ણ ગ્રંથ સત્યાર્થપ્રકાશની પણ એમણે સંસારને ભેટ આપી છે, જેનો સ્વાધ્યાય કરીને લોકો સત્ય મત અને મિથ્યા મતોનો વિચાર કરીને નિર્ણય કરી શકે છે.

ઋષિ દયાનન્દે મહાભારત પછી પહેલીવાર વેદના સત્ય અર્થોને રજૂ કરવા વાળું વેદભાષ્ય લોકભાષા હિન્દીમાં રચ્યું. તેઓએ યજુર્વેદનું સમ્પૂર્ણ તથા ઋગ્વેદનું અડધા કરતા વધારે સંસ્કૃત અને હિન્દીમાં ભાષ્ય રચ્યું જેનો લાભ આજે દેશ-વિદેશના હજારો લોકો લઈ રહ્યા છે. ઋષિ દયાનન્દે વેદોના પ્રચાર માટે જે કાર્ય કર્યું છે એનું ઐતિહાસિક મહત્ત્વ છે. એના કારણે વેદોના વિદ્વાનો આર્યસમાજના ગુરુકુલોમાંથી બહાર આવવા લાગ્યા. સ્વામી શ્રદ્ધાનન્દજી દ્વારા દયાનન્દના સ્વપ્નોને સાકાર કરવા માટે હરિદ્વાર પાસે કાંગડી ગામમાં ગુરુકુલ વિશ્વ વિદ્યાલયની સ્થાપના કરી. આજે દેશમાં દયાનન્દજીની વિચારધારા પર લગભગ 200 કરતા વધારે ગુરુકુલોનું સંચાલન થઈ રહ્યું છે જેમાં કન્યાઓ અને બાળકોના અલગ અલગ ગુરુકુલ છે. જ્યાં વેદોની વિદુષી દેવીઓ અને વિદ્વાનો બની રહ્યા છે.

ઋષિ દયાનન્દે જ સ્ત્રિઓ અને શૂદ્રોને વેદ ભણવા અને વૈદિક વિદ્વાન બનવાનું સમર્થન કર્યું હતું. આજે આર્યસમાજની વિદુષી દેવિઓ માત્ર આર્યસમાજ જ નહીં, પૌરાણિક શ્રદ્ધાળુઓના ઘરોમાં પણ યજ્ઞની બ્રહ્મા બનીને વેદ પારાયણ બૃહદ યજ્ઞોની બ્રહ્મા પણ બની રહી છે. આ ઋષિ દયાનન્દની અદ્ભૂત દેન છે.

प्रवेश सूचना

श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय ऋषि दयानन्द जी की जन्मभूमि टंकारा में

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा (गुरुकुल) में प्रवेश प्रारम्भ है। विद्यालय में अष्टाध्यायी, वेद, दर्शनशास्त्र आदि पढ़ने की उत्तम व्यवस्था है। सुविधा युक्त आवास, पौष्टिक भोजन, प्रातराश आदि के साथ गुरुकुलीय अनुशासन है। गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा) के आर्ष पाठ्यक्रम से मान्यता प्राप्त है। कक्षा सातवीं और नौवीं उत्तीर्ण, स्वस्थ और चरित्रवान मेधावी छात्रों को प्रवेश दिया जायेगा। प्रवेशार्थी समीप की आर्यसमाज के पदाधिकारी के पत्र तथा अपनी अंकशीट के साथ आवेदन करें।

आचार्य रामदेव शास्त्री, श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय

डाक टंकारा, जिला-मोरबी (सौराष्ट्र-गुजरात)-363650, मो. 09913251448

अध्यात्म पथ पत्रिका का 15वां वार्षिक समारोह सम्पन्न

अध्यात्म पथ पत्रिका के 15वें वर्ष पर ऑनलाइन 'विश्वशांति के उपाय' विषय पर विशाल व्याख्यान माला का आयोजन हुआ। जिसमें भारत, मॉरिशस, कनाडा आदि देश के लोग बड़ी संख्या में मौजूद थे। विश्वशांति का मूल मन्त्र वेद में है, कल्याणकारी ब्रह्म को जानकर ही स्थायी शांति की प्राप्ति होती है-आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री। समारोह के मुख्य अतिथि आर्य सभा मॉरिशस के प्रधान श्री हरि देव रामधनी जी ने सत्यार्थ प्रकाश की महत्ता पर प्रकाश डाला। कनाडा से ही वैदिक कल्चर सेंटर के डायरेक्टर श्री यश कपूर जी ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए आचार्य चंद्र शेखर जी को शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही सुप्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती सरोजनी जौहर जी (कनाडा निवासी) ने बहुत सुन्दर एवं सारगर्भित उद्बोधन दिया। कार्यक्रम में भजन सम्राट श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन' जी को यज्ञ श्री सम्मान तथा संगीताचार्य श्री विजय भूषण आर्य जी, आयुर्वेदाचार्या डॉ. सुषमा आर्याजी एवं आर्य भजनोपदेशिका श्रीमती कविता आर्या जी को अध्यात्म रत्न सम्मान से सम्मानित किया। वहीं नांगिया परिवार की ओर से श्री मिलाप सचदेवा को विद्या सागर नांगिया स्मृति सम्मान से विभूषित किया।

इस कार्यक्रम में सर्वश्री अश्विनी नांगिया, शशिचोपड़ा, अभिमन्यु चावला, दिनेश आर्य, वेद सिंघल, सुरेन्द्र शास्त्री, तुलसीदास नंदवानी, सविता टंडन, मीना आर्या, प्रीति आर्या, सुरिन्द्र चौधरी, आदि गणमान्य लोग बड़ी संख्या में मौजूद थे।

टंकारा समाचार ई-मेल और सोशल मीडिया पर भी उपलब्ध

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि आपका लोकप्रिय आर्य मर्यादाओं का समाचार पत्र "टंकारा समाचार" अब आधुनिक माध्यम से भी उपलब्ध है। माननीय पाठकों द्वारा दिए गए सुझावों एवम् टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टियों द्वारा निर्णय लिया गया कि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा डाक अव्यवस्थित रूप से प्रति माह ना मिलने पर असंतोष प्रकट किया जा रहा था। आप सभी को टंकारा समाचार मासिक बिना किसी रूकावट के प्राप्त होता रहेगा। आप सभी से अनुरोध है कि आप अपना सदस्यता संख्या एवम् नाम के साथ अपना ई-मेल अथवा वट्सअप नम्बर भेजने की कृपा करें। उपरोक्त सूचना आप मोबाइल नम्बर 9560688950 पर भेज कर पंजीकृत करा सकते हैं जिससे कि आपको उपरोक्त माध्यम से जोड़ा जा सके।

- ट्रस्ट मंत्री एवम् सम्पादक

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें। अब शीघ्र ही यह ई-पत्रिका बनने जा रही है जोकि इंटरनेट और वट्स पर भेजी जाएगी। विस्तृत जानकारी के लिए मुख्य पृष्ठ देखें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 200/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 1000/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से बैंक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

-प्रबन्धक

135वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज विक्रमपुरा (किला) माई हीरां गेट जालंधर का 135वां वेद कथा सप्ताह श्रावणी उपाकर्म पर्व के उपलक्ष में चतुर्वेद शतकम परायण का अनुष्ठान किया गया। पूर्णाहुति के अवसर पर आर्य समाज के प्रधान डी.ए.वी, कॉलेज के प्रिंसिपल संजीव अरोड़ा जी एवं प्रोफेसर पुनीत शर्मा जी सपत्नीक मुख्य यजमान बनकर यज्ञ लाभ प्राप्त किया। प्रि. इंद्रजीत तलवाड़ एवं प्रिंसिपल रवीन्द्र कुमार शर्मा जी के मार्गदर्शन में यज्ञ सफलता पूर्वक संपन्न किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य जयप्रकाश जी एवं पंडित हंसराज जी ने सभी श्रद्धालुओं से यज्ञ में सम्पन्न करवाया। यज्ञोपरांत प्रसिद्ध भजन उपदेशक श्री राजेश अमर प्रेमी ने मधुर भजन गाकर सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। आचार्य जयप्रकाश जी ने श्रावणी उपाकर्म की महिमा का गुणगान करते हुए स्वाध्याय के महत्व पर प्रकाश डाला। आर्य समाज के सम्मानीय मंत्री श्री इंद्रजीत तलवाड़ जी ने कहा कि आर्य समाज विक्रमपुरा के सदस्य एवम् परमात्मा की अनंत कृपा रही। आप सब याज्ञिक परिवार का सहयोग रहा, जिसके कारण हम लोग, लॉकडाउन में भी नित्यप्रति सरकार के आदेशों का अनुपालन करते हुए, यज्ञ में सहभागी बने रहे। हम आप सबके साथ एवं सामाजिक सहयोग के लिए अपने डीएवी संस्थाओं तथा आप सब का आभार व्यक्त करते हैं।

टंकारा बोधोत्सव 2021

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भाँति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन बुधवार, वीरवार, शुक्रवार 10, 11, 12 मार्च 2021 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी। अपने आने की पूर्व सूचना अवश्य भेजें। अथवा व्हाट्स अप नम्बर 9560688950 संदेश द्वारा सूचना भेजें।

- ट्रस्ट मंत्री, अजय सहगल

श्रीकृष्ण बिरला का देहावसान

कोटा के लोह पुरुष व लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी के पिता श्री श्रीकृष्ण बिरला के देहावसान पर आर्य समाज द्वारा शोक संवेदनाएं व्यक्त की गईं। आर्य समाज के प्रांतीय प्रचार प्रभारी अर्जुन देव चड्ढा, आर्य समाज तिलक नगर के प्रधान ओम प्रकाश जी तापड़िया, रामपुरा के प्रधान कैलाश बाहेती, कुन्हाड़ी के प्रधान पीसी मित्तल, रेलवे कॉलोनी के प्रधान हरिदत्त शर्मा, तिलक नगर के कोषाध्यक्ष नरेश विजयवर्गीय, तलवंडी के वरिष्ठ उपप्रधान लालचंद आर्य, महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति के मंत्री चंद्र मोहन कुशवाहा एडवोकेट, डी.ए.वी. स्कूल कोटा तलवंडी की प्राचार्य श्रीमती सरिता रंजन गौतम, और आर्य समाज के वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, गायत्री परिवार ट्रस्ट के प्रमुख जी जी पटेल ने दादाबाड़ी कोटा स्थित बिरला परिवार के सदस्यों ने शोक संवेदनाएं व्यक्त कीं।

अपने शोक संदेश में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य व मंत्री श्री विनय आर्य ने कहा कि श्रीकृष्ण बिरला में देश भक्ति, संवेदनशीलता और समाज सेवा के गुण थे। ऐसे महान आत्मा का चले जाना समाज व राष्ट्र की अपूरणीय क्षति है।

-निजी संवाददाता

चरैवेति.... तुम अजय

मेरे प्रिय अजय जी 65 बसंत देखकर 66वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं, जानकर मन आनन्दित हुआ। इस अवसर पर मन से निःसृत कुछ भाव लिपिबद्ध हैं, पढ़कर आनन्द लीजिए:

अजय जी के जन्मदिवस पर सभी देते शुभकामना।
'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की बनी रहे सद्भावना।
बनी रहे सद्भावना, स्व. सहगल जी भी देते आशीष।
आर्य समाज की प्रगति हो, ऐसा चाहते जगदीश।
कहे 'वीर' प्रसन्न हो सदा पाओ तुम विजया।
परिवारी जन भी कहते 'चरैवेति....' तुम अजय।
स्वस्थ जीवन की कामनाओं सहित

-डॉ. धर्मवीर सेठी,

कोषाध्यक्ष डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली
वरेण्यम, ए-1055, सुशान्त लोक-1 गुरुग्राम-122009

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 110 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज की आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 20,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि 'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा' के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक:-

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधान)

अजय सहगल (मंत्री)

(पृष्ठ 10 का शेष)

से मृत्यु को तर कर विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है। अविद्या का लक्षण बताते हुए वह कहते हैं कि जो अनित्य संसार और देहादि में नित्य अर्थात् जो कार्य जगत् देखा, सुना जाता है सदा रहेगा, सदा से है और योगबल से यही देवों का शरीर सदा रहता है वैसी विपरीत बुद्धि होना अविद्या का प्रथम भाग है। ऋषि दयानन्द आगे कहते हैं कि अशुचि अर्थात् मलमय स्त्री आदि के शरीर और मिथ्याभाषण, चोरी आदि अपवित्र में पवित्र बुद्धि, दूसरा, अत्यन्त विषयसेवनरूप दुःख में सुख बुद्धि आदि तीसरा, अनात्मा में आत्मबुद्धि करना अविद्या है। चार प्रकार का विपरीत ज्ञान अविद्या कहलाती है। इस के विपरीत अर्थात् अनित्य में अनित्य और नित्य में नित्य, अपवित्र में अपवित्र और पवित्र में पवित्र, दुःख में दुःख, सुख में सुख, अनात्मा में अनात्मा और आत्मा में आत्मा का ज्ञान होना विद्या है। जिससे पदार्थों का यथार्थ स्वरूप बोध होवे वह विद्या और जिस से तत्वस्वरूप न जान पड़े, अन्य में अन्य बुद्धि होवे वह अविद्या कहलाती है। अर्थात् कर्म और उपासना अविद्या इसलिये है कि यह बाह्य और अन्तर क्रियाविशेष नाम हैं, ज्ञान विशेष नहीं। इसी से यजुर्वेद 40/14 मन्त्र में कहा गया है कि विना शुद्ध कर्म और परमेश्वर की उपासना के मृत्यु दुःख से पार कोई नहीं होता। अर्थात् पवित्र कर्म, पवित्रेपासना और पवित्र ज्ञान ही से मुक्ति (जीवात्मा की आनन्द की अवस्था) और अपवित्र मिथ्याभाषणादि कर्म पाषाण मूर्ति आदि की उपासना और मिथ्याज्ञान से बन्ध (जन्म-मरण रूपी दुःख) होता है। ऋषि दयानन्द प्रदत्त इस जानकारी से यह लाभ है कि विद्या और विद्या को जानकर मनुष्य जीवन की उन्नति के अर्थ मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर चलकर अर्थात् आचरण करके, विद्या व अविद्या का सेवन कर, अपने आगामी जीवन में ज्ञानवान् मनुष्य बनता वा मोक्ष प्राप्ति में सफल होता है। ऐसा करके ही सभी मनुष्य अपनी आत्माओं को परजन्म में सुख व आनन्द प्रदान कर सकते हैं।

हमारा भावी जन्म हमारे इस वर्तमान जन्म के शुभ व अशुभ कर्मों का परिणाम होगा। हम नहीं चाहते कि हममें से कोई अगले जन्म में मनुष्य न बनकर पशु व पक्षी आदि किसी योनि में जन्म लें जहां दुःख अधिक व सुख कम मात्र में होते हैं। इसका अनुमान हम संसार में मनुष्य व पशु-पक्षी आदि प्राणियों के जीवन को देखकर लगा सकते हैं। यदि इस जन्म में हमारे शुभ व पुण्य कर्म आधे से अधिक होंगे और अशुभ व पाप कर्म आधे से कम होंगे, तो निश्चय ही परमात्मा हमें अगला जन्म हमारे कर्मानुसार मनुष्य योनि में उत्तम स्थिति व परिवेश में प्रदान करेंगे। इस कर्म-फल रहस्य को जानकर हमें अशुभ कर्मों का करना अद्यावधि छोड़ देना चाहिये और जन्म-जन्मान्तर में सुखों के हेतु शुभ व पुण्य वैदिक कर्मों सहित पंचमहायज्ञ आदि कर्मों को निष्ठा व श्रद्धापूर्वक करना चाहिये। हम अगले जन्म में मनुष्य तभी बनेंगे जब इस जन्म में हमारे शुभकर्म आधे से अधिक होंगे और पाप कर्म न्यून होंगे।

-196 चुक्खवाला-2, देहरादून-248001, फोन: 09412985121

(पृष्ठ 02 का शेष)

को दिए इस कार्य का हिस्सा हो पर आज के समय में जब करीबी रिश्तों में भी दूरियाँ आ रही हैं, इसमें बेहतर सम्बन्ध बनाने की बात भी शामिल हो जिसमें सबसे अहम है अपने ही परिवारजनों से जुड़ाव कायम रखना, माता-पिता को स्कूल की ओर से निर्देश दिए जायें कि बच्चों को दादा-दादी नाना-नानी के घर लेकर जाए और उन्हें उनके साथ घुलने मिलने दें। उनका प्यार और भावनात्मक सहारा आपके बच्चों के लिए बहुत जरूरी है। उनके साथ तस्वीरें लें, साथ ही बच्चों को अपने बचपन और अपने परिवार के इतिहास के बारे में भी बताएं। बच्चों के लिए रंग बिरंगी तस्वीरों वाली कुछ कहानी की किताबें लाने के निर्देश भी दिए गए हों।

डॉ. श्री पूनम सूरी जी द्वारा एक अनौपचारिक चर्चा में कही गई यह बात आज की आवश्यकता है कि पाठ्यक्रम के अतिरिक्त इस बिन्दुओं को भी महत्व देना होगा जिससे बच्चों, पारिवारिक सम्बन्ध, सांस्कृतिक सम्बन्ध मेल मिलाप और जीवन में आत्म विश्वास के साथ कैसे जीवन व्यतीत करना है जान सकें।

-निजी संवाददाता द्वारा

(पृष्ठ 01 का शेष)

विचार, आदर्श तथा मान्यताएं सच्चे अर्थ में जीवन और जगत को सीधा, सच्चा एवं सरल मार्ग दिखा सकती हैं। परम्परागत प्रतिवर्ष दीपावली आती है, लोग मिलते हैं, भीड़ बिखर जाती है। हम अपना कर्तव्य पूरा समझ लेते हैं। जलसा, जुलूस, लंगर, फोटो, माला, भाषण आदि तक कार्यक्रम सीमित रह जाते हैं। महापुरुषों की जयंतियां, पर्व, स्मृति दिवस आदि हमें जगाने, संभालने व आत्मचिन्तन के लिए आते हैं। जिन उद्देश्यों, आदर्शों तथा सिद्धान्तों के लिए संस्था, संगठन व आर्य समाज बना था उस दिशा में चिंतन करना चाहिए। क्या खोया? क्या पाया? कहां के लिए चले थे? किधर जा रहे हैं, विवादों तथा स्वार्थों को छोड़ों, परस्पर मिलो, बैठो, सोचो आर्य विचारधारा को कैसे आगे बढ़ायें- 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उद्देश्य कैसे प्राप्त करें, संसार में तेजी से फैल रहे ढोंग, पाखंड, गुरुडम आदि को कैसे हटाया जाए? दीपावली अंतस में फैल रहे अंधकार को हटाने और मिटाने का संदेश लेकर आती है। दीवाली ऋषि दयानन्द को स्मरण करने का पर्व है, जो ऋषिवर ने सत्य सनातन वैदिक धर्म का मार्ग दिखाया था उससे हम भटक तो नहीं गए? जिन उद्देश्यों के लिए ऋषि ने आर्य समाज बनाया था, उन सिद्धान्तों और विचारों के चिंतन की प्रेरणा देता है-ऋषि निर्वाणोत्सव जो हाल ही में मनाया गया है। आर्यों उठो! अपने स्वरूप, कर्तव्य तथा दायित्व को समझो तभी हम ऋषि को सच्चे अर्थ में श्रद्धांजलि देने के हकदार हैं।

आप ऋषि जन्मभूमि हेतु दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा "श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा" के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, संसद मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0015300 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी है मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा दें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

निवेदक:-

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

अजय सहगल (मन्त्री)

“सफलता”

का कोई मंत्र नहीं है,
यह तो सिर्फ परिश्रम का फल है

टंकारा समाचार

नवम्बर 2020

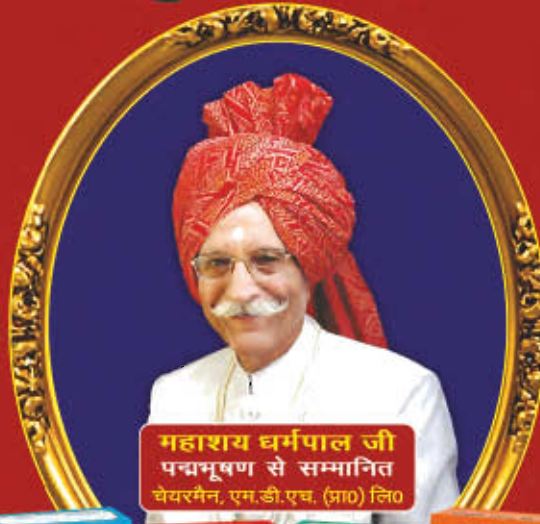
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2018-19-20

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2018-20

Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-11-2020

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.10.2020

कामयाबियों भरे 101 साल रहे बेमिसाल



महाशय धर्मपाल जी
पद्मभूषण से सम्मानित
चेयरमैन, एम.डी.एच. (ग्रा०) लि०

विश्व प्रसिद्ध एम डी एच
मसाले 101 सालों से
शुद्धता और गुणवत्ता
की कसौटी पर खरे उतरे।



**MDH मसालों में 101 साल की शुद्धता के उत्सव पर
अपने सभी ग्राहकों, वितरकों एवं शुभचिन्तकों को हार्दिक बधाई**

भारत सरकार ने व्यापार और उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण (Trade & Industry, Food Processing) में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए महाशय जी को पद्मभूषण सम्मान से अलंकृत किया गया।

भारत सरकार द्वारा "ITID Quality Excellence Award" से सम्मानित किया गया। यूरोप में मसालों की शुद्धता के लिए "Arch of Europe" प्रदान किया गया। "Reader Digest Most Trusted Brand Platinum Award" भी प्रदान किया गया।

The Brand Trust Report ने वर्ष 2013 से 2020 तक लगातार 6 वर्षों के लिए ब्रांड एमडीएच को India's Most Trusted Masala Brand & India's Most Attractive Brands का स्थान दिया है।

MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच-सच



महाशय धर्मपाल जी ने सियालकोट (पाकिस्तान) से आकर कठिन परिस्थितियों और संघर्ष से अपने जीवन को संवारा है और बड़े पैमाने पर समाज और मानव जाति की सेवा के लिये अपने व्यवसाय को समर्पित किया है। अधिक जानने के लिये [YouTube Channel पर Mahashay Dharampal Gulati](#) टाईप करें और देखें।